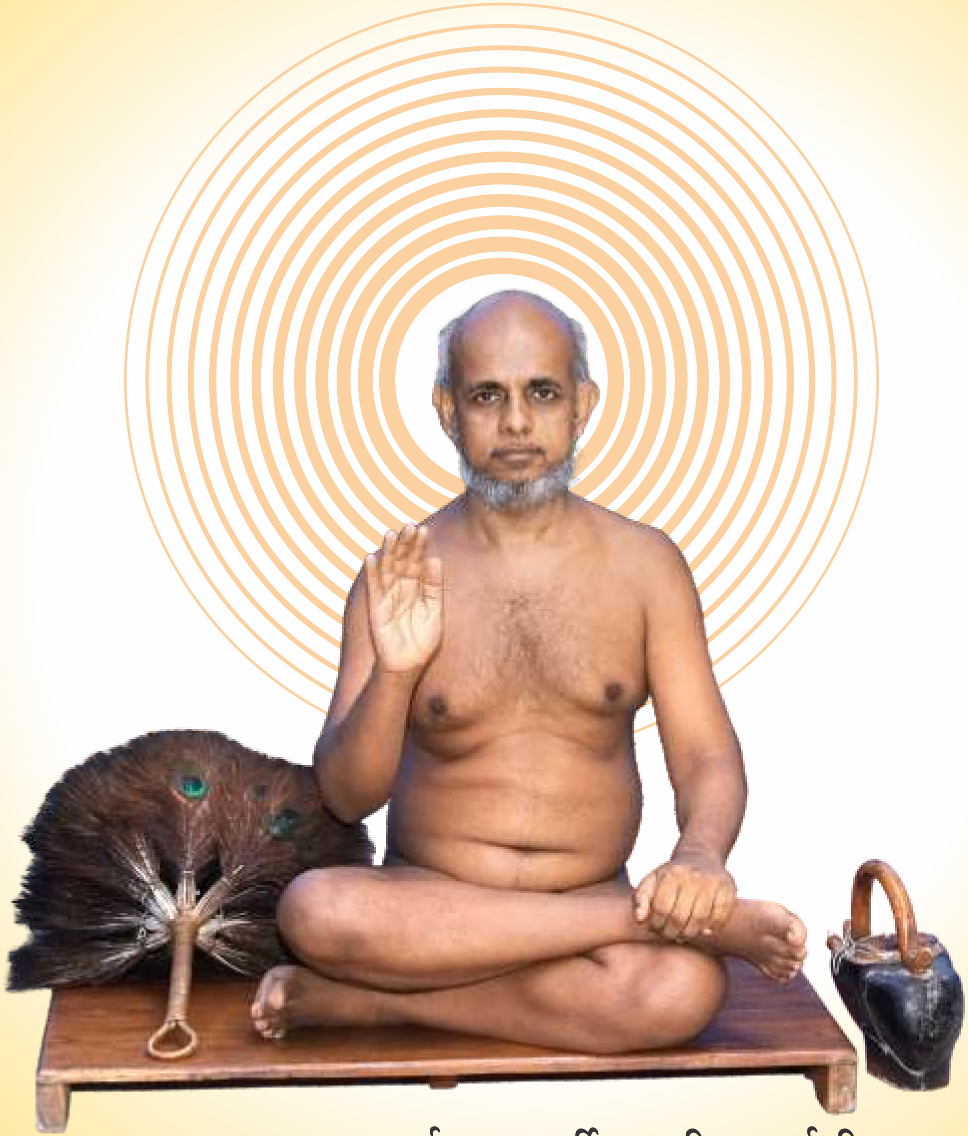

परम पूज्य तपश्चर्या–चक्रवर्ती पट्टाधीशाचार्यश्री

सुविधिसागर जी महाराज

के

50 वें जन्मदिवस के पावन अवसर पर

सुविधि–परिवार के द्वारा आयोजित

जिनवाणी-महोत्सव

सहस्रग्रन्थसंग्रह

* जन्मदिवस 19–03–1971 * मुनिदीक्षा–11–05–1989 * आचार्यपद– 20–06–2004

पट्टाधीशपद– 24–12–2010 (20–06–2004 को की गई उद्घोषणा के अनुसार)

परम पूज्य आचार्यश्री सन्मतिसागर जी महाराज के द्वारा की गई उद्घोषणाः–

हमारी समाधि के पश्चात् आपको इस संघ के संचालकपद पर नियुक्त करते हैं।

(अंकलीकर वाणी–जुलाई 2004) (अक्षयज्योति–अक्तूबर 2004)

विशद सम्यक् आराधना महामण्डल विधान

कृतिकार :

परम पूज्य आचार्यश्री विशदसागर जी महाराज

प्राप्ति स्थान :

विशद साहित्य केन्द्र श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, कुआँ वाला,

जैनपुरी रेवाड़ी (हरियाणा)

(परम्परानायक)

परम पूज्य चारित्र–चक्रवर्ती,
आचार्यश्री आदिसागर जी महाराज
(अंकलीकर)

(द्वितीय पट्टाधीश)

परम पूज्य तीर्थभक्त–शिरोमणि,
आचार्यश्री महावीरकीर्ति जी महाराज

(तृतीय पट्टाधीश)

परम पूज्य सिद्धान्त–चक्रवर्ती,
आचार्यश्री सन्मतिसागर जी महाराज

(चतुर्थ पट्टाधीश)

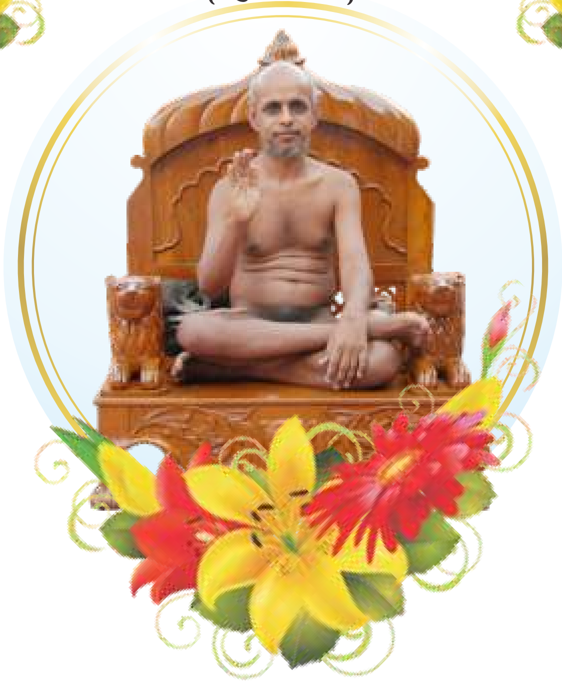

परम पूज्य तपश्चर्या–चक्रवर्ती, आचार्यश्री सुविधिसागर जी महाराज

दिगम्बर साधु निरन्तर पगविहार करते रहते हैं। ग्रन्थभण्डार को साथ में रख कर विहार करना अशक्यप्राय: होता है। फलत: उनको ग्रन्थों के सन्दर्भ देखने में असुविधा होती है। उनकी सुविधा के लिये इस कोश का निर्माण किया गया है। इस कोश के निर्माण में किसी भी प्रकार का व्यापारिक हेतु नहीं है।

आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न श्रावकबन्धुओं से निवेदन है कि वे ग्रन्थ का विक्रय कर अध्ययन करने की परम्परा को कायम रखें।

मुखपृष्ठ पर हमने ग्रन्थकर्त्ता, अनुवादक, सम्पादक, प्रकाशक आदि के नाम दिये हैं। किसी संस्थान का कर्तृत्व हमने लुप्त नहीं किया है।

इस कोश के लिये आवश्यक ग्रन्थ हमें अनेक स्रोतों से प्राप्त हुये हैं। हम उन सभी का आभार मानते हैं।

सुविधि–परिवार

Ñfr % fo'kn lE;d~ vkjk/kuk egke.My foèkku

Ñfrdkj % i-iw- lkfgR; jRukdj] {kekewfrZ
vkpk;Z Jh 108 fo'kn lkxj th egkjkt

laLdj.k % izFke&2013* izfr;k¡ %1000

ladyu % eqfu Jh 108 fo'kky lkxj th egkjkt

lg;ksxh % {kqYyd Jh 105 folksel kxj th egkjkt

laiknu % cz- T;ksfr nhnh ¼9829076085½ vkLFkk nhnh] liuk nhnh

la;kstu % lksuw] fdj.k] vkjrh nhnh] mek nhnh

lEidZ lw=k % 9829127533] 9953877155

izkfIr LFky % 1- tSu ljkoj lfefr] fueZyda pekj xksèkk]
2142] fueZy fudqat] jsfM;ks ekdsZV
efugkjksa dk jkLrk] t;iqj
Qksu%0141&2319907 ¼?kj½ eks- %9414812008

2- Jh jkts'k dqekj tSu Bsdsnkj
,&107] cqèk fogkj] vyoj] eks- %9414016566

3- fo'kn lkfgR; dsUnz
Jh fnxEcj tSu eafnj dqvk¡ okyk tSuiqjh
jsokM+h ¼gfj;k.kk½] 9812502062] 09416888879

4- fo'kn lkfgR; dsUnz] gjh'k tSu
t; vfjgUr VªsMlZ] 6561 usg: xyh
fu;j ykyc`Ùkh pkSd] xka/kh uxj] fnYyh
eks- 09818115971] 09136248971

ewY; % 25@& #- ek=k

µ%vFkZ lkStU; %µ
Jherh yfyrk iksn~nkj
/keZiRuh Jh fcgkjh yky iksn~nkj (tSu)
e-u- 200] fiz;n'kZuh fogkj] fnYyh&110092
eks-%9810287716] 9810287717

eqnzd% ikjl izdk'ku] fnYyh Qksu ua- %09811374961] 09818394651
E-mail : pkjainparas@gmail.com

सम्यक् आराधना व्रत विधि

प्रथम विधि–आराधना व्रत भाद्रपद में लिये जाते हैं। इस माह की शुक्ल पक्ष में एकादशी, द्वादशी, त्रयोदशी और चतुर्दशी का उपवास करना, चार दिन का उपवास करने की शक्ति न हो तो कांजी आदि लेना चाहिए।

व्रत के दिनों में किसी तिथि की वृद्धि हो तो एक दिन अधिक व्रत करना एवं एक तिथि की हानि होने पर एक दिन पहले से लेकर व्रत समाप्ति पर्यंत उपवास करना चाहिए। व्रतों के पूर्ण होने पर अंत में उत्साह सहित उद्यापन करे। व्रत की जाप–

ॐ ह्रीं सम्यक् दर्शन-ज्ञान चारित्र तपेभ्यो नमः

द्वितीय विधि–दूसरे प्रकार से व्रत इस प्रकार भी कर सकते हैं कि–भाद्रपद की चौथ से व्रत प्रारंभ करके प्रतिमाह की चौथ, निरंतर चार वर्ष तक व्रत किये जा सकते हैं जिसमें 96 चौथ होगी। जो चौबीसों तीर्थकर के अनंत चतुष्टय की पूर्णता के रूप में माने गयें हैं। इस प्रकार अनंत चतुष्टय की प्राप्ति की भावना से यह व्रत करके पुण्यार्जन करते हुए शिव पथ के राही बनें।

व्रत विधिः सम्यक् आराधना व्रत के लिए सर्वप्रथम भाद्रपद शुक्ल एकादशी को शुद्ध भाव से स्नानादि क्रिया करके स्वच्छ सफेद वस्त्र धारण कर जिनेन्द्र-अभिषेक करें। दशमी से इस व्रत की धारणा एवं पूर्णिमा को पारणा होती है। अतः दशमी को एकाशन के पश्चात् चारों प्रकार के आहार का त्यागकर विकथा और कषायों का त्याग करें।

एकादशी से लेकर चतुर्दशी तक चारों ही दिनों को विशेषरूप से धर्म ध्यानपूर्वक व्यतीत करें। प्रतिदिन त्रैकालिक सामायिक, प्रतिक्रमण और सम्यक् आराधना विधान करना चाहिए। व्रत के दिनों में प्रातः, मध्याह्न, सांयकाल मंत्र का जाप करना चाहिए।

आरंभ और परिग्रह का त्याग करके अपना समय सामायिक पूजा स्वाध्यादि धर्म ध्यान में बितावें। व्रतों के दिनों में शीलव्रत का पालन करना आवश्यक है। इस व्रत को 4 वर्ष तक करने के उपरांत पूर्णिमा को उद्यापन करना चाहिए।

यह जीव अनादिकाल से मोह कर्मवश मिथ्या श्रद्धान, ज्ञान आचरण एवं तप करता हुआ पुन: पुन: कर्म बंध करता है संसार में जन्ममरणादि अनेक प्रकार के दुखों को भोगता है। जीव को दु:खों से छुटकारा पाने के लिए चारों प्रकार की आराधना की प्राप्ति के लिए निरंतर प्रयत्न करना चाहिए। तभी जीव को सुख की प्राप्ति हो सकती है। चार आराधना हैं–

1. **दर्शन**–पुद्‌गलादि द्रव्यों से भिन्न निज स्वरूप का श्रद्धान होना दर्शन आराधना है।

2. **ज्ञान**–पदार्थों के यथार्थ स्वरूप को संशय, विपर्यय व अनध्यवसाय आदि दोषों से रहित जानना सो ज्ञान आराधना हैं।

3. **चरित्र**–आत्मा की निज परिणति में ही रमण करना है अर्थात् रागद्वेषादि विभावभावों क्रोधादि कषायों से आत्मा को अलग करना चारित्र आराधना है।

4. **तप**–इच्छाओं का निरोध करना तप आराधना है। जो भव्यजीव बहिरंग तपश्चरण करता है उसे बहिरंग लक्ष्मी एवं जो जीव अंतरंग तपश्चरण करता है उन्हें मोक्ष लक्ष्मी की प्राप्ति होती है। अंत में उद्यापन करें तथा यथा योग्यदान दें।

–मुनि विशालसागर

"भक्ति सुमन"

वर्तमान में शुक्ल ध्यान तो हो नहीं सकता व धर्म ध्यान के माध्यम से ही मुक्ति का मार्ग प्रशस्त किया जा सकता है मोक्ष मार्ग में कारण भूत पुण्य निधि इस काल में प्रभु भक्ति से ही प्राप्त की जा सकती है। इस हेतु **परम पूज्य ज्ञान वारिधि आचार्य श्री १०८ विशद सागर जी महाराज** ने ध्यान की गहराई में उतरकर हमारे लिए सुन्दर, सरस, अनमोल शब्दरूपी **"विशद सम्यक आराधना महामण्डल विधान"** की यह कृति प्रदान की हैं। गुरुवर के चरणों में कोटिश: नमोस्तु।

पतित को पावन बनाते हैं गुरु, जेठ को सावन बनाते हैं गुरु।
गुरुदेव की महिमा कहाँ तक कहूँ, भक्त को भगवान बनाते हैं गुरु।

–ब्र. आरती दीदी।

मूलनायक सहित समुच्चय पूजन

(स्थापना)

तीर्थंकर कल्याणक धारी, तथा देव नव कहे महान्।
देव-शास्त्र–गुरु हैं उपकारी, करने वाले जग कल्याण॥
मुक्ती पाँए जहाँ जिनेश्वर, पावन तीर्थ क्षेत्र निर्वाण।
विद्यमान तीर्थंकर आदि, पूज्य हुए जो जगत प्रधान॥
मोक्ष मार्ग दिखलाने वाला, पावन वीतराग विज्ञान।
विशद हृदय के सिंहासन पर, करते भाव सहित आह्वान॥

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक ... सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञान! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ: ठ: स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(शम्भू छन्द)

जल पिया अनादी से हमने, पर प्यास बुझा न पाए हैं।
हे नाथ! आपके चरण शरण, अब नीर चढ़ाने लाए हैं॥
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी॥1॥

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक...सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल रही कषायों की अग्नि, हम उससे सतत सताए हैं।
अब नील गिरि का चंदन ले, संताप नशाने आए हैं॥
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी॥2॥

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक...सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

गुण शाश्वत मम अक्षय अखण्ड, वह गुण प्रगटाने आए हैं।
निज शक्ति प्रकट करने अक्षत, यह आज चढ़ाने लाए हैं॥
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी॥3॥

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक...सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्पों से सुरभी पाने का, असफल प्रयास करते आए।
अब निज अनुभूति हेतु प्रभु, यह सुरभित पुष्प यहाँ लाए॥
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी॥4॥

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक...सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

निज गुण हैं व्यंजन सरस श्रेष्ठ, उनकी हम सुधि बिसराए हैं।
अब क्षुधा रोग हो शांत विशद, नैवेद्य चढ़ाने लाए हैं॥
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी॥5॥

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक...सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञाता दृष्टा स्वभाव मेरा, हम भूल उसे पछताए हैं।
पर्याय दृष्टि में अटक रहे, न निज स्वरूप प्रगटाए हैं॥
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी॥6॥

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक...सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

जो गुण सिद्धों ने पाए हैं, उनकी शक्ती हम पाए हैं।
अभिव्यक्त नहीं कर पाए अतः, भवसागर में भटकाए हैं॥

जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी॥7॥

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक...सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो अष्टकर्मविध्वंसनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल उत्तम से भी उत्तम शुभ, शिवफल हे नाथ ना पाए हैं।
कर्मोंकृत फल शुभ अशुभ मिला, भव सिन्धु में गोते खाए हैं॥
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी॥8॥

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक...सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

पद है अनर्घ मेरा अनुपम, अब तक यह जान न पाए हैं।
भटकाते भाव विभाव जहाँ, वह भाव बनाते आए हैं॥
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी॥9॥

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक...सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– **प्रासुक करके नीर यह, देने जल की धार।**
लाए हैं हम भाव से, मिटे भ्रमण संसार॥ शान्तये शांतिधारा...

दोहा– **पुष्पों से पुष्पाञ्जली, करते हैं हम आज।**
सुख-शांति सौभाग्यमय, होवे सकल समाज॥

पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्...

पंच कल्याणक के अर्घ्य

तीर्थंकर पद के धनी, पाएँ गर्भ कल्याण।
अर्चा करें जो भाव से, पावे निज स्थान॥1॥

ॐ ह्रीं गर्भकल्याणकप्राप्त मूलनायक...सहित सर्व जिनेश्वरेभ्यो अर्घ्यं नि. स्वाहा।

महिमा जन्म कल्याण की, होती अपरम्पार।
पूजा कर सुर नर मुनी, करें आत्म उद्धार॥2॥

ॐ ह्रीं जन्मकल्याणकप्राप्त मूलनायक...सहित सर्व जिनेश्वरेभ्यो अर्घ्यं नि. स्वाहा।

तप कल्याणक प्राप्त कर, करें साधना घोर।
कर्म काठ को नाशकर, बढ़ें मुक्ति की ओर॥3॥

ॐ ह्रीं तपकल्याणकप्राप्त मूलनायक...सहित सर्व जिनेश्वरेभ्यो अर्घ्यं नि. स्वाहा।

प्रगटाते निज ध्यान कर, जिनवर केवलज्ञान।
स्व-पर उपकारी बनें, तीर्थंकर भगवान॥4॥

ॐ ह्रीं ज्ञानकल्याणकप्राप्त मूलनायक...सहित सर्व जिनेश्वरेभ्यो अर्घ्यं नि. स्वाहा।

आठों कर्म विनाश कर, पाते पद निर्वाण।
भव्य जीव इस लोक में, करें विशद गुणगान॥5॥

ॐ ह्रीं मोक्षकल्याणकप्राप्त मूलनायक...सहित सर्व जिनेश्वरेभ्यो अर्घ्यं नि. स्वाहा।

जयमाला

दोहा– तीर्थंकर नव देवता, तीर्थ क्षेत्र निर्वाण।
देव शास्त्र गुरुदेव का, करते हम गुणगान॥

(शम्भू छन्द)

गुण अनन्त हैं तीर्थंकर के, महिमा का कोई पार नहीं।
तीन लोकवर्ति जीवों में, ओर ना मिलते अन्य कहीं॥
विंशति कोड़ा-कोड़ी सागर, कल्प काल का समय कहा।
उत्सर्पण अरु अवसर्पिण यह, कल्पकाल दो रूप रहा॥1॥
रहे विभाजित छह भेदों में, यहाँ कहे जो दोनों काल।
भरतैरावत द्वय क्षेत्रों में, कालचक्र यह चले त्रिकाल॥
चौथे काल में तीर्थंकर जिन, पाते है पाँचों कल्याण।
चौबिस तीर्थंकर होते हैं जो, पाते हैं पद निर्वाण॥2॥
वृषभनाथ से महावीर तक, वर्तमान के जिन चौबीस।
जिनकी गुण महिमा जग गाए, हम भी चरण झुकाते शीश॥
अन्य क्षेत्र सब रहे अवस्थित, हों विदेह में बीस जिनेश।
एक सौ साठ भी हो सकते हैं, चतुर्थकाल यहाँ होय विशेष॥3॥

अर्हन्तों के यश का गौरव, सारा जग यह गाता है।
सिद्ध शिला पर सिद्ध प्रभु को, अपने उर से ध्याता है॥
आचार्योपाध्याय सर्व साधु हैं, शुभ रत्नत्रय के धारी।
जैनधर्म जिन चैत्य जिनालय, जिनवाणी जग उपकारी॥4॥
प्रभु जहाँ कल्याणक पाते, वह भूमि होती पावन।
वस्तु स्वभाव धर्म रत्नत्रय, कहा लोक में मनभावन॥
गुणवानों के गुण चिंतन से, गुण का होता शीघ्र विकाश।
तीन लोक में पुण्य पताका, यश का होता शीघ्र प्रकाश॥5॥
वस्तु तत्त्व जानने वाला, भेद ज्ञान प्रगटाता है।
द्वादश अनुप्रेक्षा का चिन्तन, शुभ वैराग्य जगाता है॥
यह संसार असार बताया, इसमें कुछ भी नित्य नहीं।
शाश्वत सुख को जग में खोजा, किन्तु पाया नहीं कहीं॥6॥
पुण्य पाप का खेल निराला, जो सुख-दुःख का दाता है।
और किसी की बात कहें क्या, तन न साथ निभाता है॥
गुप्ति समिति धर्मादि का, पाना अतिशय कठिन रहा।
संवर और निर्जरा करना, जग में दुर्लभ काम कहा॥7॥
सम्यक् श्रद्धा पाना दुर्लभ, दुर्लभ होता सम्यक् ज्ञान।
संयम धारण करना दुर्लभ, दुर्लभ होता करना ध्यान॥
तीर्थंकर पद पाना दुर्लभ, तीन लोक में रहा महान्।
विशद भाव से नाम आपका, करते हैं हम नित गुणगान॥8॥
शरणागत के सखा आप हो, हरने वाले उनके पाप।
जो भी ध्याये भक्ति भाव से, मिट जाए भव का संताप॥
इस जग के दुःख हरने वाले, भक्तों के तुम हो भगवान।
जब तक जीवन रहे हमारा, करते रहें आपका ध्यान॥9॥

दोहा– नेता मुक्ती मार्ग के, तीन लोक के नाथ।
शिवपद पाने आये हम, चरण झुकाते माथ॥

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक......सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो अनर्घपदप्राप्त्ये जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– हृदय विराजो आन के, मूलनायक भगवान।
मुक्ति पाने के लिए, करते हम गुणगान॥

॥ इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ॥

स्तवन

दोहा– सम्यक् आराधना जो करें, वे पावें शिव धाम।
जिन की अर्चा हम करें, करके विशद प्रणाम॥

(शम्भू छन्द)

मोक्ष महल की पहली सीढ़ी, सम्यक् दर्शन गाया है।
अष्ट अंग से युक्त दोष, पच्चीस रहित बतलाया है॥
देवशास्त्र गुरु के प्रति श्रद्धा, सम्यक् दर्शन कहलाए।
वस्तु तत्त्व में श्रद्धा युत जो, सम्यक् ज्ञान कहा जाए॥1॥
सम्यक् दर्शन युक्त ज्ञान से, तत्त्वों को जाना जाए।
पंचभेद अरु अष्ट अंग युत, वस्तु तत्त्व को बतलाए॥
मतिश्रुत अवधि मनः पर्यय युत, केवल ज्ञान रूप गाये।
मिथ्या ज्ञान तीन होते हैं, सद्दृष्टी को ना भाए॥2॥
सम्यक् दर्शन ज्ञान साथ में, सम्यक् चारित पाते हैं।
सहज ज्ञान के धारी ऋषिवर, मोक्ष महल को जाते हैं॥
तेरह विध चरित्र बताया, धारण करते मुनि अनगार।
पंच महाव्रत समिति गुप्तियों, युक्त कहा है अपरम्पार॥3॥
तप के द्वादश भेद कहे हैं, सम्यक् दर्शन युक्त कहा।
बाह्याभ्यन्तर भेद रूप से, संतों के जो मुख्य रहा॥
कर्म निर्जरा का कारण है, संवर करने वाला है।
मुक्तिवधू को वरने हेतू, सुतप श्रेष्ठ वरमाला है॥4॥
सम्यक् दर्शन ज्ञान आचरण, सम्यक् तप जो पाते हैं।
वह आराधना करने वाले, स्वयं आराध्य बन जाते हैं॥
सम्यक् आराधना यह विधान शुभ, भाव सहित जो करते हैं।
अल्प समय में सर्व सौख्य पा, मुक्ति वधू को वरते हैं॥5॥

पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

सम्यक् आराधना विधान पूजा

स्थापना

सम्यक् दर्शनज्ञान चरण तप, रहे मोक्ष के यह साधन।
इनको धारण करने वालों, को करते सुर नर वन्दन॥
जिनाराधना करते हैं जो, उनका जीवन बने महान।
मुक्ती पथ पाने को हम भी, करते भाव सहित आह्वान॥

दोहा– करके जीव आराधना, बन जाते आराध्य।
अल्प समय में प्राप्त वह, कर लेते हैं साध्य॥

ॐ ह्रीं सम्यक् दर्शन–ज्ञान–चारित्र तप! अत्र आगच्छ–आगच्छ संवौषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं सम्यक् दर्शन–ज्ञान–चारित्र तप! अत्र तिष्ठ–तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं सम्यक् दर्शन–ज्ञान–चारित्र तप! अत्र मम भव भववषट् सन्निधिकरणम्।

(चौबोला छन्द)

सम्यक् ज्ञान नीर को पाकर, जन्म जरादिक रोग हरें।
अजर अमर अविनाशी पद पा, चेतन गुण का भोग करें॥
महामोह मिथ्यात्व त्यागकर, सम्यक् दर्शन प्रगटाएँ।
शिव पथ के राही बन जाएँ, तव पद में हम सिरनाएँ॥1॥

ॐ ह्रीं सम्यक्–दर्शन–ज्ञान–चारित्र तपाराधनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

सम्यक् श्रद्धा का चन्दन ले, भवाताप ज्वर नाश करें।
सिद्ध शुद्ध अविनाशी निर्मल, चेतन तत्त्व प्रकाश करें॥
महामोह मिथ्यात्व त्यागकर, सम्यक् दर्शन प्रगटाएँ।
शिव पथ के राही बन जाएँ, तव पद में हम सिरनाएँ॥2॥

ॐ ह्रीं सम्यक्–दर्शन–ज्ञान–चारित्र तपाराधनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

सम्यक् चारित्र के अक्षत से, अक्षय निधि पाने आयें।
भव सिन्धु से पार हेतु जिन, गुण पूजाकर सुख पायें॥
महामोह मिथ्यात्व त्यागकर, सम्यक् दर्शन प्रगटाएँ।
शिव पथ के राही बन जाएँ, तव पद में हम सिरनाएँ॥3॥

ॐ ह्रीं सम्यक्–दर्शन–ज्ञान–चारित्र तपाराधनाय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

रत्नत्रय के पुष्प चढ़ाकर, शील सुगुण हम प्रगटाएँ।
काम वाण विध्वंश करें अब, महाशील पति बन जाएँ॥
महामोह मिथ्यात्व त्यागकर, सम्यक् दर्शन प्रगटाएँ।
शिव पथ के राही बन जाएँ, तव पद में हम सिरनाएँ॥4॥
ॐ ह्रीं सम्यक्-दर्शन-ज्ञान-चारित्र तपाराधनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।
सम्यक् तपमय तप के चरु से, पूजाकर के हर्षायें।
नाश करें हम क्षुधा वेदना, परम तृप्ति उर में पायें॥
महामोह मिथ्यात्व त्यागकर, सम्यक् दर्शन प्रगटाएँ।
शिव पथ के राही बन जाएँ, तव पद में हम सिरनाएँ॥5॥
ॐ ह्रीं सम्यक्-दर्शन-ज्ञान-चारित्र तपाराधनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।
सद् आराधना के दीपक से, मोह कर्म का नाश करें।
आत्म ज्ञान का दीप जलाकर, केवल ज्ञान प्रकाश करें॥
महामोह मिथ्यात्व त्यागकर, सम्यक् दर्शन प्रगटाएँ।
शिव पथ के राही बन जाएँ, तव पद में हम सिरनाएँ॥6॥
ॐ ह्रीं सम्यक्-दर्शन-ज्ञान-चारित्र तपाराधनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।
दश धर्मों की धूप बनाकर, ध्यान अग्नि में दहन करें।
अष्ट कर्म परिपूर्ण नाशकर, सिद्ध सुपद को ग्रहण करें॥
महामोह मिथ्यात्व त्यागकर, सम्यक् दर्शन प्रगटाएँ।
शिव पथ के राही बन जाएँ, तव पद में हम सिरनाएँ॥7॥
ॐ ह्रीं सम्यक्-दर्शन-ज्ञान-चारित्र तपाराधनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।
उत्तम संयम के फल लेकर, पूजा कर महिमा गाएँ।
अजर अमर पद पाकर के हम, सिद्ध शिला पर बश जाएँ॥
महामोह मिथ्यात्व त्यागकर, सम्यक् दर्शन प्रगटाएँ।
शिव पथ के राही बन जाएँ, तव पद में हम सिरनाएँ॥8॥
ॐ ह्रीं सम्यक्-दर्शन-ज्ञान-चारित्र तपाराधनाय फलं निर्वपामीति स्वाहा।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्यं चढ़ाकर, अष्टम वसुधा को पाएँ।
अष्ट गुणों की सिद्धी पाने, जिन चरणों में सिरनाएँ॥
महामोह मिथ्यात्व त्यागकर, सम्यक् दर्शन प्रगटाएँ।
शिव पथ के राही बन जाएँ, तव पद में हम सिरनाएँ॥8॥
ॐ ह्रीं सम्यक्-दर्शन-ज्ञान-चारित्र तपाराधनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा-**तीर्थंकर पद प्राप्त हो, सोलहकारण भाय।**
शांतीधारा दे रहे, भाव सहित हर्षाय॥
(शांतयेशांतिधारा)

सम्यक् यह आराधना, तीर्थंकर पद देय।
पुष्पाञ्जलि करते यहाँ, पाने सुपद अजेय॥
(पुष्पांजलिंक्षिपेत)

जयमाला

दोहा-**काल अनादि आराधना, हैं आराध्य त्रिकाल।**
हम आराधना की विशद, गाते हैं जयमाल॥
(छन्द शम्भू)

सम्यक् दर्शन ज्ञान आचरण, सुतप मोक्ष का मार्ग कहा।
जिसने पाया धर्म विशद यह, उसने पाया मोक्ष अहा॥
प्रथम रत्न सम्यक् दर्शन है, करना तत्त्वों में श्रद्धान।
निरतिचार श्रद्धा का धारी, सारे जग में रहा महान॥1
श्रद्धाहीन ज्ञान चरित का, रहता नहीं है कोई अर्थ।
कठिन-कठिन तप करना भाई, हो जाता है सब कुछ व्यर्थ।
गुण का ग्रहण और दोषों का, समीचीन करना परिहार।
सम्यक् ज्ञान के द्वारा होता, जग में जीवों का उपकार॥2
ज्ञान को सम्यक् करने वाला, होता है सम्यक् श्रद्धान।
पुद्गल अर्ध परावर्तन में, जीव करे निश्चय कल्याण॥
वस्तु तत्त्व का निर्णय करने, से हो मोह तिमिर का ह्रास।
सम्यक् चारित का जीवन में, हो जाता है पूर्ण विकाश॥3
निरतिचार व्रत के पालन से, हो जाता है स्थिर ध्यान।
निजानन्द को पाने वाले, करते निजानन्द रसपान॥
कर्मों का संवर हो जिससे, आश्रव का हो पूर्ण विनाश।
गुण श्रेणी हो कर्म निर्जरा, होवे केवल ज्ञान प्रकाश॥4

रत्नत्रय का फल यह अनुपम, अनन्त चतुष्टय होवे प्राप्त।
अष्ट गुणों को पाने वाले, सिद्ध सनातन बनते आप्त॥
अन्तर्मन की यही भावना, सम्यक् तप का होय विकाश।
कर्म निर्जरा करें 'विशद' हम, पाएँ सिद्ध शिला पर वास॥5

दोहा–**सम्यक् दर्शन मोक्ष पद, का सुन्दर सोपान।**
दर्शन ज्ञानाचरण तप, जिससे बने महान्॥

ॐ ह्रीं सम्यक्–दर्शन–ज्ञान–चरित्र तपाराधनाय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा–**विशद भावना है यही, जागे सद् श्रद्धान॥**
दर्शन ज्ञानाचरणतप, पा पाएँ निर्वाण॥

(इत्याशीर्वाद पुष्पांजलि क्षिपेत्)

सम्यक् दर्शन पूजा
(स्थापना)

पच्चीस दोष टालने वाले, सप्त तत्त्व में है श्रद्धान।
मिथ्यातम के नाशी पाते, देह जीव में भेद विज्ञान॥
उपशम क्षायिक और क्षयोपशम, रूप बताया महति महान।
सम्यक् श्रद्धा पाने हेतू, करते हम उर में आह्वान॥

दोहा–**मूल कहा आराधना, का सम्यक् श्रद्धान।**
सम्यक् दृष्टी जीव ही, पा सकता निर्वाण॥

ॐ ह्रीं सम्यक्दर्शन! अत्र आगच्छ–आगच्छ संवौषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं सम्यक्दर्शन! अत्र तिष्ठ–तिष्ठ ठः–ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं सम्यक्दर्शन! अत्र मम सन्निहितो भव–भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(तर्ज–माता तू दया करके...)

हम पर में भटकाए, निज को ना जाना है।
त्रय रोग नशाने को, यह नीर चढ़ाना है॥
हे प्रभु मेरे उर में, अब सद् श्रद्धान जगे।
जिन पूजा भक्ती में, मन मेरा सदा लगे॥1॥

ॐ ह्रीं सम्यक्दर्शनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दन की शीतलता, बहु सौख्य दिलाती है।
तव वाणी हे जिनवर, भव ताप नशाती है॥
हे प्रभु मेरे उर में, अब सद् श्रद्धान जगे।
जिन पूजा भक्ती में, मन मेरा सदा लगे॥2॥

ॐ ह्रीं सम्यक्दर्शनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षण भंगुर जग सारा, हम जान नहीं पाये।
अब अक्षय पद पाने, हे नाथ! शरण आये॥
हे प्रभु मेरे उर में, अब सद् श्रद्धान जगे।
जिन पूजा भक्ती में, मन मेरा सदा लगे॥3॥

ॐ ह्रीं सम्यक्दर्शनाय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

हम काम वाण नाशी, यह पुष्प चढ़ाते हैं।
शरणागत बनकर के, निज शीश झुकाते हैं॥
हे प्रभु मेरे उर में, अब सद् श्रद्धान जगे।
जिन पूजा भक्ती में, मन मेरा सदा लगे॥4॥

ॐ ह्रीं सम्यक्दर्शनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

तृष्णा का क्षय करके, प्रभु समरस पा जाएँ।
चउ संज्ञा क्षय करके, आतम का रस पाएँ॥
हे प्रभु मेरे उर में, अब सद् श्रद्धान जगे।
जिन पूजा भक्ती में, मन मेरा सदा लगे॥5॥

ॐ ह्रीं सम्यक्दर्शनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अज्ञान नशे मेरा, निज आतम दीप जले।
जो मोह तिमिर छाया, अब मेरा पूर्ण गले॥
हे प्रभु मेरे उर में, अब सद् श्रद्धान जगे।
जिन पूजा भक्ती में, मन मेरा सदा लगे॥6॥

ॐ ह्रीं सम्यक्दर्शनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मों की शक्ती से, हम हारे हैं स्वामी।
वह नाशो अब मेरे, हे जिन अन्तर्यामी॥

हे प्रभु मेरे उर में, अब सद् श्रद्धान जगे।
जिन पूजा भक्ती में, मन मेरा सदा लगे।।7।।

ॐ ॐ ह्रीं सम्यक्दर्शनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ फल से राग किया, हमने बहु दुख पाये।
फल चढ़ा रहे स्वामी, शिव फल पाने आये।।
हे प्रभु मेरे उर में, अब सद् श्रद्धान जगे।
जिन पूजा भक्ती में, मन मेरा सदा लगे।।8।।

ॐ ह्रीं सम्यक्दर्शनाय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

हम शिव पद पाने को, यह अर्घ्य चढ़ाते हैं।
तुम हो प्रभु अविकारी, हम महिमा गाते हैं।।
हे प्रभु मेरे उर में, अब सद् श्रद्धान जगे।
जिन पूजा भक्ती में, मन मेरा सदा लगे।।9।।

ॐ ह्रीं सम्यक्दर्शनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा–होता है जल का सदा, शीतल श्रेष्ठ स्वभाव।
भवसिन्धु से पार हो, मेरी भी अब नाव।।

शांतये शांतिधारा

मोहित करते जीव को, सुरभित सुन्दर फूल।
पुष्पाञ्जलि जो भी करें, नशे कर्म का मूल।।

पुष्पांजलिं क्षिपेत्

प्रथम वलयः

दोहा–सम्यक् दर्शन के रहे, आठ अंग शुभकार।
पुष्पांजलि कर पुजते, पाने भवदधिपार।।

(प्रथम वलयस्योपरि-पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

आठ अंग (छन्द जोगीरासा)

देव शास्त्र गुरु जैन धर्म में, शंका मन में आवे।
दोष करे सम्यक् दर्शन में, भव-भव में भटकावे।।

हों निशंक जिन धर्म वचन में, सद्दृष्टी कहलावें।
सम्यक् चारित धर अनुक्रम से, सिद्ध शिला को जावें।।1।।

ॐ ह्रीं निःशंकित गुणोपेत सम्यक्दर्शनाय अर्घ्य निर्व. स्वाहा।

कर्मवशी जो अंत सहित है, बीज पाप का गाया।
भव सुख की चाहत करना ही, कांक्षा दोष कहाया।।
यह सुख वांछा तजने वाले, सद्दृष्टी कहलावें।
सम्यक् चारित धर अनुक्रम से, सिद्ध शिला को जावें।।2।।

ॐ ह्रीं निःकांक्षित गुणोपेत सम्यक्दर्शनाय अर्घ्य निर्व. स्वाहा।

है स्वभाव से देह अपावन, रत्नत्रय से है पावन।
त्याग जुगुप्सा गुण में प्रीति, मुनि तन है मन भावन।।
ग्लानी को तजने वाले ही, सद्दृष्टी कहलावें।
सम्यक् चारित धर अनुक्रम से, सिद्ध शिला को जावें।।3।।

ॐ ह्रीं निर्विचिकित्सा गुणोपेत सम्यक्दर्शनाय अर्घ्य निर्व. स्वाहा।

कुपथ पंथ पंथी की स्तुति, और प्रशंसा करना।
भव दुख का कारण है भाई, दर्शन दोष समझना।।
करें मूढ़ की नहीं प्रशंसा, सद्दृष्टी कहलावें।
सम्यक् चारित धर अनुक्रम से, सिद्ध शिला को जावें।।4।।

ॐ ह्रीं अमूढ़ दृष्टि गुणोपेत सम्यक्दर्शनाय अर्घ्य निर्व. स्वाहा।

स्वयं शुद्ध है मोक्ष का मारग, मोही दोष लगावे।
धर्म की निन्दा होय जहाँ यह, दर्शन दोष कहावे।।
अवगुण ढाकें दोषी जन के, सद्दृष्टी कहलावें।
सम्यक् चारित धर अनुक्रम से, सिद्ध शिला को जावें।।5।।

ॐ ह्रीं उपगूहन गुणोपेत सम्यक्दर्शनाय अर्घ्य निर्व. स्वाहा।

सम्यक् दर्शन या चारित से, चलित कोई हो जावे।
अज्ञानी भव भ्रमण करे वह, दर्शन दोष लगावे।।
धर्मभाव से उनके मन में, पुनः धर्म उपजावें।
सम्यक् चारित धर अनुक्रम से, सिद्ध शिला को जावें।।6।।

ॐ ह्रीं स्थितिकरण गुणोपेत सम्यक्दर्शनाय अर्घ्य निर्व. स्वाहा।

धर्म और साधर्मी जन में, प्रीति नहीं जो धरते।
सम्यक् दर्शन में वह प्राणी, दोष अनेकों करते॥
वात्सल्य का भाव धरें तो, सद्दृष्टी कहलावें।
सम्यक् चारित धर अनुक्रम से, सिद्ध शिला को जावें॥7॥

ॐ ह्रीं वात्सल्य गुणोपेत सम्यक्दर्शनाय अर्घ्य निर्व. स्वाहा।

मिथ्या अरु अज्ञान तिमिर जो, फैला सारे जग में।
समकित में वह दोष लगावें, चलें न मुक्ती मग में॥
जैन धर्म को करें प्रकाशित, सद्दृष्टी कहलावें।
सम्यक् चारित धर अनुक्रम से, सिद्ध शिला को जावें॥8॥

ॐ ह्रीं प्रभावना गुणोपेत सम्यक्दर्शनाय अर्घ्य निर्व. स्वाहा।

(शम्भू छन्द)

आठ अंग सम्यक् दर्शन के, जो भी प्राणी पाते हैं।
अन्तर्मन में वह सब प्राणी, भेद ज्ञान प्रगटाते हैं॥
मोक्ष मार्ग के राही बनते, पा लेते है केवल ज्ञान।
सम्यक् चारित धर अनुक्रम से, पा जाते हैं पद निर्वाण॥9॥

ॐ ह्रीं अष्ट अंगयुत सम्यक् दर्शनाय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा

जयमाला

दोहा–सम्यक् दर्शन कर्म का, माना गया है काल।
शिव पद के राही बने, गायें जो जयमाल॥

चौपाई

काल अनादि अनन्त बताया, इसका अन्त कहीं न पाया।
लोकालोक अनन्त कहाया, जिनवाणी में ऐसा गाया॥
जीव लोक में रहते भाई, इनकी संख्या कही न जाई।
जीवादिक छह द्रव्यें जानो, सर्व लोक में इनको मानो॥
चतुर्गती में जीव भ्रमाते, कर्मोदय से सुख-दुख पाते।
मिथ्यामति के कारण जानो, भ्रमण होय ऐसा पहचानो॥

उससे प्राणी मुक्ती पावें, जैन धर्म जो भी अपनावें।
सम्यक दर्शन श्रेष्ठ बताया, जैन धर्म का मूल कहाया॥
शंकादी जो दोष नशावें, जिसके रहते मद ना पावें।
तीन मूढ़ता को जो त्यागें, ना अनायतन में अनुरागें॥
पच्चिस दोष रहित हो ज्ञानी, देव शास्त्र गुरु के श्रद्धानी।
सम्यक् दर्शन के गुण पावें, अन्दर में संवेग जगावें॥
गुण निर्वेग जगाने वाले, सम्यकदृष्टी जीव निराले।
करें आत्म निंदा जो भाई, रही आत्मा को सुखदायी॥
उपशम गुण के धारी जानो, भक्ती युक्त जिन्हें पहिचानो।
हों वात्सल्य गुणों के धारी, अनुकम्पा गुणधर मनहारी॥
द्रव्य तत्त्व में श्रद्धा पावें, सप्त भयों से रहित कहावें।
उपशम, क्षय, क्षायोपशम, जानो, भेद तीन जिसके पहिचानो॥
'विशद' भावना हम यह भाएँ, निर्मल सम्यक् दर्शन पाएँ।
आत्म धर्म हम फिर प्रगटाएँ, अन्त में शिवपुर धाम बनाएँ॥

दोहा–सम्यक् दर्शन मोह का, कहा गया है काल।
भाव सहित हम वन्दना, करते 'विशद' त्रिकाल॥

ॐ ह्रीं सम्यक्दर्शनाय जयमाला पूर्णार्घ्यं नि. स्वाहा।

दोहा–शाश्वत् पद का हेतु है, शाश्वत् सम्यक् भाव।
भाने को उद्धत रहें, करके कोई उपाव।

इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

सम्यक् ज्ञान पूजा

(स्थापना)

ज्ञानाराधना करने वाले, हैं इस जग में जो भी जीव।
सम्यक् श्रद्धावान लोक में, प्राप्त करें जो पुण्य अतीव॥
अनुक्रम से शिव पथ के राही, बनकर पाते पद निर्वाण।
विशद हृदय में करते हैं हम, ज्ञानारधना का आह्वान॥

दोहा–**तीनों लोकों को करे, सम्यक् ज्ञान प्रकाश।**
ज्ञान प्रकाशित हो मेरे, अर्ज करे यह दास॥

ॐ ह्रीं सम्यक्ज्ञान! अत्र आगच्छ-आगच्छ संवौषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं सम्यक्ज्ञान! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं सम्यक्ज्ञान! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(शम्भू छन्द)

उज्ज्वल जल ये क्षीरोदधि का, झारी में भर लाए हैं।
जन्म जरादिक रोग नाश हों, यही भावना भाए हैं॥
मोक्ष मार्ग दिखलाने वाले, बने प्रभू शिव पथ गामी।
सम्यक् ज्ञान प्रदान करो अब, हमको भी हे अन्तर्यामी

ॐ ह्रीं सम्यक्ज्ञानाराधनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दन केसर एक मिलाकर, स्वर्ण पात्र में लाए हैं।
भवाताप के नाश हेतु हम, अर्चा करने आए हैं॥
मोक्ष मार्ग दिखलाने वाले, बने आप शिव पथ गामी।
सम्यक् ज्ञान प्रदान करो अब, हमको भी अन्तर्यामी

ॐ ह्रीं सम्यक्ज्ञानाराधनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

उज्ज्वल तन्दुल मनहर सुन्दर, रजत थाल में लाए हैं।
अक्षय पद पाने हम निर्मल, यहाँ चढ़ाने आए हैं॥
मोक्ष मार्ग दिखलाने वाले, बने आप शिव पथ गामी।
सम्यक् ज्ञान प्रदान करो अब, हमको भी हे अन्तर्यामी

ॐ ह्रीं सम्यक्ज्ञानाराधनाय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

सुरभित पुष्प सुगन्धित अनुपम, उपवन से हम लाए हैं।
निज गुण की सुरभित खुशबु हम, यहाँ जगाने आए हैं॥
मोक्ष मार्ग दिखलाने वाले, बने आप शिव पथ गामी।
सम्यक् ज्ञान प्रदान करो अब, हमको भी अन्तर्यामी

ॐ ह्रीं सम्यक्ज्ञानाराधनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

घृत मेवा चीनी के पावन, व्यंजन सरस बनाए हैं।
क्षुधा व्याधि उपशम करने को, आज यहाँ पर आए हैं॥

मोक्ष मार्ग दिखलाने वाले, बने आप शिव पथ गामी।
सम्यक् ज्ञान प्रदान करो अब, हमको भी अन्तर्यामी

ॐ ह्रीं सम्यक्ज्ञानाराधनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्योति जलाकर के दीपक में, तिमिर नशाने आए हैं।
मोह अन्ध हो नाश हमारा, यही भावना भाए हैं॥
मोक्ष मार्ग दिखलाने वाले, बने आप शिव पथ गामी।
सम्यक् ज्ञान प्रदान करो अब, हमको भी अन्तर्यामी

ॐ ह्रीं सम्यक्ज्ञानाराधनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूपायन में धूप जलाकर, कर्म नशाने आए हैं।
अष्ट कर्म के नाश हेतु हम, चरण शरण में आए हैं॥
मोक्ष मार्ग दिखलाने वाले, बने आप शिव पथ गामी।
सम्यक् ज्ञान प्रदान करो अब, हमको भी अन्तर्यामी

ॐ ह्रीं सम्यक्ज्ञानाराधनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

भाँति-भाँति के फल उपवन से, लेकर थाल भराए हैं।
मोक्ष महाफल पाने को हम, विशद भावना भाए हैं॥
मोक्ष मार्ग दिखलाने वाले, बने आप शिव पथ गामी।
सम्यक् ज्ञान प्रदान करो अब, हमको भी अन्तर्यामी

ॐ ह्रीं सम्यक्ज्ञानाराधनाय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

पद अनर्घ्य पाने को अनुपम, अर्घ्य बनाकर लाए हैं।
शाश्वत सुपद प्राप्त हो हमको, पूजा करने आए हैं॥
मोक्ष मार्ग दिखलाने वाले, बने आप शिव पथ गामी।
सम्यक् ज्ञान प्रदान करो अब, हमको भी अन्तर्यामी

ॐ ह्रीं सम्यक्ज्ञानाराधनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– **श्री जिनेन्द्र की भक्ति में, होकर के तल्लीन।**
शांती धारा कर विशद, कर्म करेंगे क्षीण॥

शांतये शांतिधारा

समता भावी बन स्वयं, पाएँगे स्वभाव।
पूजा करने का जगा, मेरे मन में चाव॥

पुष्पांजलिं क्षिपेत्

द्वितिय वलयः

दोहा–**आठ अंग सद् ज्ञान के, बतलाए भगवान।**
अर्घ्य चढ़ाकर हम यहाँ, करते हैं गुणगान॥
(द्वितीय वलयोपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

(सम्यक् ज्ञान के आठ अंग के अर्घ्य)

चौपाई

शुद्ध शब्द पढ़ना हे भाई, शब्दाचार कहा सुखदायी।
सम्यक् ज्ञान हृदय में जागे, श्रुताभ्यास में मन अब लागे॥
सम्यक् ज्ञान अंग के धारी, होते जग में मंगलकारी।
भक्ति भाव से अर्घ्य चढ़ाते, सम्यक् श्रुत की महिमा गाते॥1॥

ॐ ह्रीं जिनवर कथित शब्दाचार अंग सहित सम्यक्ज्ञानेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुद्ध अर्थ को पढ़ने वाले, अर्थाचारी कहे निराले।
हम परमार्थ प्राप्त कर पाएँ, मन में यही भावना भाएँ॥
सम्यक् ज्ञान अंग के धारी, होते जग में मंगलकारी।
भक्ति भाव से अर्घ्य चढ़ाते, सम्यक् श्रुत की महिमा गाते॥2॥

ॐ ह्रीं जिनवर कथित अर्थाचार अंग सहित सम्यक्ज्ञानेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शब्द अर्थ आगम अनुसारी, पढ़ने वाले उभयाचारी
उभय ज्ञान पायें मनहारी, द्रव्य भाव श्रुत मंगलकारी॥
सम्यक् ज्ञान अंग के धारी, होते जग में मंगलकारी।
भक्ति भाव से अर्घ्य चढ़ाते, सम्यक् श्रुत की महिमा गाते॥3॥

ॐ ह्रीं जिनवर कथित उभयाचार अंग सहित सम्यक्ज्ञानेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

युक्त समय में पढ़ते भाई, कालाचारी हैं सुखदायी।
श्रुताभ्यास में काल बिताएँ, अपना सम्यक् ज्ञान बढ़ाएँ॥

विशद सम्यक् आराधना महामण्डल विधान

सम्यक् ज्ञान अंग के धारी, होते जग में मंगलकारी।
भक्ति भाव से अर्घ्य चढ़ाते, सम्यक् श्रुत की महिमा गाते॥4॥

ॐ ह्रीं जिनवर कथित कालाचार अंग सहित सम्यक्ज्ञानेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रुत की विनय करें जो प्राणी, विनयाचारी हैं वह ज्ञानी।
विनय हमारे हृदय समाए, सम्यक् ज्ञान जगाने आए॥
सम्यक् ज्ञान अंग के धारी, होते जग में मंगलकारी।
भक्ति भाव से अर्घ्य चढ़ाते, सम्यक् श्रुत की महिमा गाते॥5॥

ॐ ह्रीं जिनवर कथित विनयाचार अंग सहित सम्यक्ज्ञानेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रुत का जो सौभाग्य जगाएँ, बहुमानाचारी कहलाएँ।
हम बहुमान प्राप्त कर पाएँ, विशद भावना मन में भाएँ॥
सम्यक् ज्ञान अंग के धारी, होते जग में मंगलकारी।
भक्ति भाव से अर्घ्य चढ़ाते, सम्यक् श्रुत की महिमा गाते॥6॥

ॐ ह्रीं जिनवर कथित बहुमानाचार अंग सहित सम्यक्ज्ञानेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुरु का कभी ना नाम छिपावें, गुण अनिह्नवाचार वे पावें।
भाव से हम गुरु के गुण गाएँ, गुरु गुण पाकर शिव पद पाएँ॥
सम्यक् ज्ञान अंग के धारी, होते जग में मंगलकारी।
भक्ति भाव से अर्घ्य चढ़ाते, सम्यक् श्रुत की महिमा गाते॥7॥

ॐ ह्रीं जिनवर कथित अनिन्हावाचार अंग सहित सम्यक्ज्ञानेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो संकल्प करें कुछ ज्ञानी, गुण उपधान पाएँ वे प्राणी
हम उपधानाचार जगाएँ, ज्ञानावर्णी कर्म नशाएँ॥
सम्यक् ज्ञान अंग के धारी, होते जग में मंगलकारी।
भक्ति भाव से अर्घ्य चढ़ाते, सम्यक् श्रुत की महिमा गाते॥8॥

ॐ ह्रीं जिनवर कथित उपधानाचार अंग सहित सम्यक्ज्ञानेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा–**सम्यक् ज्ञान के अंग यह, आठ कहे जिन देव।**
हृदय रहे ये भावना, पाएँ ज्ञान सदैव।।9।।

ॐ ह्रीं जिनवर कथित अष्ट अंग सहित सम्यक्ज्ञानेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा–**ज्ञानाराधना जो करें, हों वह मालामाल।**
अतः आज हम भाव से, गाते हैं जयमाल।।

सम्यक श्रद्धा सहित आचरण करते हैं जो ज्ञानी।
सम्यक् दृष्टी होते हैं वह, रहे भेद विज्ञानी।।
तीर्थंकर के मुख से निकली, है वाणी जिनवाणी।
अंग बाह्य और अंग प्रविष्टी, रूप कही कल्याणी।।
गणधर ने चारों अनुयोगों, में जिनवाणी गाई।
द्वादशांग श्रुत की जननी शुभ, जिनवाणी कहलाई।।
गुरुमुख से सुनकर पढ़कर के, श्रुत का ज्ञान बढ़ाएँ।
सम्यक् श्रद्धा सहित सुधी जन, श्रुतज्ञानी बन जाएँ।।
स्वाध्याय शुभ कहा परम तप, श्रेष्ठ निर्जरा कारी।
संयम धारण करने वाले, बनें जीव अनगारी।।
सप्त तत्त्व अरु नव पदार्थ का, वर्णन करने वाली।
श्री जिनेन्द्र की वाणी मानो, है अमृत की प्याली।।
अनेकान्तमय वाणी प्यारी, जग-जन की हितकारी।
वस्तु स्वरूप बताने वाली, जग में मंगलकारी।।
ॐकारमय दिव्य ध्वनि शुभ, सप्त भंग मय गाई।
चार कोस के जीव सुनें सब, त्रय गतियों के भाई।।
त्रय मुहूर्त तक त्रि संध्याओं, में जिनवर बिखराए।
चक्री इन्द्र गणेन्द्र के पूँछे, शेष समय खिर जाए।।
स्याद्वाद मय परम औषधि, जिनवाणी भव हारी।
भेद ज्ञान प्रगटाने वाली, जन-जन की उपकारी।।

द्रव्य भावश्रुत रूप मनोहर, जिनवाणी शुभ जानो।
परम्परागत आचार्यों ने, लेखन किया है मानो।।
स्वाध्याय कर जिनवाणी का, भेद विज्ञान जगाना।
बनकर अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगी, आतम शुद्ध बनाना।
सूत्र ग्रन्थ का अध्ययन भाई, ना अकाल में कीजे।
जो अकाल का समय बताया, भक्ति पाठ में दीजे।।
जैनागम का पठन त्रिकालिक, भव्यों का सुखकारी।
स्वाध्याय होवे सुकाल में, जग जन मंगलकारी।।
श्रुताभ्यास शुभ किया गया जो, विस्मृत भी हो जावे।
जन्मान्तर में या निमित्त कोई, ज्यों का त्यों प्रगटावे।।
इस प्रकार की श्रद्धा पाके, ज्ञानाभ्यास बढ़ाएँ।
विनय सहित जिन गुरु शास्त्रों की, करके विनय कराएँ।।

दोहा –**भाते हैं यह भावना, पूर्ण करो भगवान।**
सम्यक्ज्ञान प्राप्त हो, सुपद मिले निर्वाण।।

ॐ ह्रीं सम्यक्ज्ञान आराधनाय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा –**सम्यक् ज्ञान महान है, शिव सुख का आधार।**
उभय लोक सुखकर विशद, मोक्ष महल का द्वार।।

इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

सम्यक् चरित्र पूजा

स्थापना दोहा

जो चरित आराधना, पालन करते लोग।
मुक्ति वधू का शीघ्र ही, पाते वे संयोग।।
सम्यक् चरित्र पालकर, करते कर्म विनाश।
कर्मनाश कर शीघ्र ही, करते शिवपुर वास।।
सम्यक् चारित्र प्राप्त हो, हमको हे भगवान्।
करते हम चारित्र का, निज उर में आह्वान।।

ॐ ह्रीं सम्यक्चरित्र! अत्र आगच्छ-आगच्छ संवौषट् आह्वाननम्।

ॐ ह्रीं सम्यक्चरित्र! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं सम्यक्चरित्र! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(तर्ज-शम्भू छन्द)

हम लीन हुए जग विषयों में, मद मस्त रहे खुद को भूले।
भवसागर में भटकाए हैं, बहु राग द्वेषकर कर के फूले।।
अब आत्म सुधारस पीने को, यह निर्मल जल भर लाए हैं।
हम सम्यक् चारित पाकर के, शिव पदवी पाने आए हैं।।1।।

ॐ ह्रीं सम्यक्चरित्राराधनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

संसार बढ़ाया है हमने, चेतन को किया स्वयं काला।
बढ़ रही कषायों की अग्नी, निज का अस्तित्व मिटा डाला।।
संताप मिटाने भव-भव का, यह चन्दन घिसकर लाए हैं।
हम सम्यक् चारित पाकर के, शिव पदवी पाने आए हैं।।2।।

ॐ ह्रीं सम्यक्चरित्राराधनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

इस भव समुद्र के पार हेतु, रत्नत्रय है पावन नौका।
अक्षय अखण्ड शिव पद पाने, का मिला हमें यह शुभ मौका।।
शुभ पद पाने अक्षय अनुपम, यह अक्षत श्रेष्ठ धुवाएँ हैं।
हम सम्यक् चारित पाकर के, शिव पदवी पाने आए हैं।।3।।

ॐ ह्रीं सम्यक्चरित्राराधनाय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

हम मोह वारुणी पीकर के, मतवाले होकर घूमे हैं।
भोगों की इच्छा करके कई, दुःखों के हेतू चूमे हैं।।
अब कामवाण विध्वंश हेतु, मनसिज चरणों में लाए हैं।
हम सम्यक् चारित पाकर के, शिव पदवी पाने आए हैं।।4।।

ॐ ह्रीं सम्यक्चरित्राराधनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

मन मोहक व्यञ्जन खाकर के, इस तन की भूख मिटाई है।
कुछ क्षण को शांत हुए लेकिन, वह फिर, से उदय में आई है।।
अब क्षुधा रोग के शमन हेतु, नैवेद्य सरस यह लाए हैं।
हम सम्यक् चारित पाकर के, शिव पदवी पाने आए हैं।।5।।

ॐ ह्रीं सम्यक्चरित्राराधनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोहान्धकार में भ्रमित हुए, भव वन में दुख भरपूर सहे।
हम राग द्वेष की धूप छाँव, से व्याकुल हो चकचूर रहे।।
अब मोह महातम के नाशक, यह दीप जलाकर लाए हैं।
हम सम्यक् चारित पाकर के, शिव पदवी पाने आए हैं।।6।।

ॐ ह्रीं सम्यक्चरित्राराधनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

दुख की ज्वाला से त्रस्त विशद, अवनीतल दिखता सारा है।
बेहोश पड़े संसारी जन, न दिखता कहीं सहारा है।।
हो कर्म पुञ्ज का नाश धूप, अतएव, जलाने लाए हैं।
हम सम्यक् चारित पाकर के, शिव पदवी पाने आए हैं।।7।।

ॐ ह्रीं सम्यक्चरित्राराधनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

जिसको निज कहकर अपनाते, वह स्वार्थ पूर्ण कर चल देते।
जब हमको ठुकराते अपने, तब खेद स्वयं ही कर लेते।।
अब मोक्ष महाफल पाने को, यह श्रेष्ठ सरस फल लाए हैं।
हम सम्यक् चारित पाकर के, शिव पदवी पाने आए हैं।।8।।

ॐ ह्रीं सम्यक्चरित्राराधनाय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल चन्दन अक्षत पुष्प मिला, नैवेद्य दीप यह धूप अहा।
शुभ फल यह आठों द्रव्यों का, यह अर्घ्य श्रेष्ठ शुभकार रहा।।
हम पद अनर्घ्य पाने अनुपम, यह अर्घ्य बनाकर लाए हैं।
हम सम्यक् चारित पाकर के, शिव पदवी पाने आए हैं।।9।।

ॐ ह्रीं सम्यक्चरित्राराधनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- **दिव्य भानु सम रूप है, जिन शासन के दीप।**
शांति धारा दे रहे, हे प्रभु चरण समीप।।

शांतये शांतिधारा

भक्ति भाव से भक्त यह, आए चरण के दास।
पुष्पाञ्जलि करते चरण, करना नहीं उदास।।

पुष्पांजलिं क्षिपेत्

तृतीय वलयः

दोहा–**सम्यक् चारित्र प्राप्त कर, करना आतम शुद्ध।**
पुष्पाञ्जलि करते विशद, जीवन हो विशुद्ध॥
(तृतीय वलयोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

सम्यक् चारित्र के अर्घ्य

(शम्भू छन्द)

त्रस स्थावर जीव सभी को, जान रहे हैं आप समान।
तीन योग से समता धारें, दुष्ट कोइ आ जाय महान॥
परम अहिंसा व्रत के धारी, मुनिवर जग उपकारी हैं।
चरण वन्दना करते हैं हम, जग में मंगलकारी हैं॥1॥

ॐ ह्रीं अहिंसा महाव्रत सहित सम्यक् चारित्राय अर्घ्य निर्व. स्वाहा

द्रव्य क्षेत्र अरु काल भाव से, वस्तू जो जिस रूप रही।
नहीं अन्यथा वचन बोलते, कहते जो जिस रूप कही॥
परम सत्यव्रत के धारी शुभ, मुनिवर जग उपकारी हैं।
चरण वन्दना करते हैं हम, जग में मंगलकारी हैं॥2॥

ॐ ह्रीं सत्य सहित महाव्रत सम्यक् चारित्राय अर्घ्य निर्व. स्वाहा

बिना दिए पर की वस्तु को, छूते लेते नहीं कभी।
रहित याचना नग्न दिगम्बर, त्याग दिए हैं द्रव्य सभी॥
व्रत अचोर्य के धारी पावन, मुनिवर जग उपकारी हैं।
चरण वन्दना करते हैं हम, जग में मंगलकारी हैं॥3॥

ॐ ह्रीं अचौर्य महाव्रत सहित सम्यक् चारित्राय अर्घ्य निर्व. स्वाहा

नारी देव मनुष्य पशु की, मन, वच, तन से छोड़ दिए।
शीलव्रती हो मुक्ति वधु से, अपना नाता जोड़ लिए॥
ब्रह्मचर्य व्रत के धारी शुभ, मुनिवर जग उपकारी हैं॥
चरण वन्दना करते हैं हम, जग में मंगलकारी हैं॥4॥

ॐ ह्रीं ब्रह्मचर्य महाव्रत सहित सम्यक् चारित्राय अर्घ्य निर्व. स्वाहा

बाह्याभ्यन्तर रहा परिग्रह, पूर्ण रूप से छोड़ दिया।
सारे जग की आशाओं से, जिसने मुख को मोड़ लिया॥
सर्व परिग्रह व्रत के धारी, मुनिवर जग उपकारी हैं।
चरण वन्दना करते हैं हम, जग में मंगलकारी हैं॥5॥

ॐ ह्रीं अपरिग्रह समिति सहित सम्यक् चारित्राय अर्घ्य निर्व. स्वाहा

चार हाथ भूमी को लखकर, राह पे चलते जाते हैं।
यत्र तत्र कुछ नहीं देखते, समता हृदय सजाते हैं॥
ईर्या पथ से चलते हैं जो, मुनिवर जग उपकारी हैं।
चरण वन्दना करते हैं हम, जग में मंगलकारी हैं॥6॥

ॐ ह्रीं ईर्या समिति सहित सम्यक् चारित्राय अर्घ्य निर्व. स्वाहा

हित मित प्रिय वाणी है जिनकी, बोलें आगम के अनुसार।
भव्य जीव सुनकर कर लेते, स्वयं आप ही कंठाधार॥
भाषा समिति धारने वाले, मुनिवर जग उपकारी हैं।
चरण वन्दना करते हैं हम, जग में मंगलकारी हैं॥7॥

ॐ ह्रीं भाषा समिति सहित सम्यक् चारित्राय अर्घ्य निर्व. स्वाहा

प्रासुक शुद्ध अन्न जल को भी, पूर्ण शोध कर लें आहार।
छियालिस दोष टालकर लेते, साम्य भाव से हो अविकार॥
समिति ऐषणा धारण करते, मुनिवर जग उपकारी हैं।
चरण वन्दना करते हैं हम, जग में मंगलकारी हैं॥8॥

ॐ ह्रीं ऐषणा समिति सहित सम्यक् चारित्राय अर्घ्य निर्व. स्वाहा

देख शोध परिमार्जित करके, वस्तू का करते आदान।
रखने में जीवों की रक्षा, का रखते हैं पूरा ध्यान।
समिति धरें आदान निक्षेपण, मुनिवर जग उपकारी हैं।
चरण वन्दना करते हैं हम, जग में मंगलकारी हैं॥9॥

ॐ ह्रीं आदान समिति सहित सम्यक् चारित्राय अर्घ्य निर्व. स्वाहा

छिद्र रहित प्रासुक भूमी पर, करते है जो मूत्र पुरीश।
जीवों की रक्षा में हरदम, तत्पर रहते जैन मुनीश॥

शुभ व्युत्सर्ग समिति के धारी, मुनिवर जग उपकारी हैं।
चरण वन्दना करते है हम, जग में मंगलकारी हैं।।10।।
ॐ ह्रीं व्युत्सर्ग समिति सहित सम्यक् चारित्राय अर्घ्य निर्व. स्वाहा

मन मर्कट होता अति चंचल, यत्र तत्र दौड़ा जावे।
उसको वश में करना भाई, मनोगुप्ति जो कहलावे।।
सम्यक् चारित पाकर के हम, मोक्षमार्ग को अपनाएँ।
अर्घ्य चढ़ाकर पूजा करते, शिवपथ गामी बन जाएँ।।11।।
ॐ ह्रीं मन गुप्ति सहित सम्यक् चारित्राय अर्घ्य निर्व. स्वाहा

हित मित प्रिय जो वचन उचरते, मधुर वचन मुख से बोलें।
करुणाकारी वचन बोलने, गुप्तीधर मुख ना खोलें।।
सम्यक् चारित पाकर के हम, मोक्षमार्ग को अपनाएँ।
अर्घ्य चढ़ाकर पूजा करते, शिवपथ गामी बन जाएँ।।12।।
ॐ ह्रीं वचन गुप्ति सहित सम्यक् चारित्राय अर्घ्य निर्व. स्वाहा

निज काया को वश मे करके, चंचलता को त्याग रहे।
तन में स्थिरता धर के जो, काय गुप्ति में लाग रहे।।
सम्यक् चारित पाकर के हम, मोक्षमार्ग को अपनाएँ।
अर्घ्य चढ़ाकर पूजा करते, शिवपथ गामी बन जाएँ।।13।।
ॐ ह्रीं काय गुप्ति सहित सम्यक् चारित्राय अर्घ्य निर्व. स्वाहा

पंच महाव्रत समिति गुप्तियाँ, तेरह विध चारित्र कहा।
जिसको पाना मेरे जीवन, का शुभ अन्तिम लक्ष्य रहा।।
सम्यक् चारित पाकर के हम, मोक्षमार्ग को अपनाएँ।
अर्घ्य चढ़ाकर पूजा करते, शिवपथ गामी बन जाएँ।।14।।
ॐ ह्रीं त्रयोदश विधि सम्यक् चारित्राय अर्घ्य निर्व. स्वाहा

जयमाला

दोहा–**है चारित्र आराधना, भाई अनुपम ढाल**
शिव पथ पर हम भी बढ़ें, गाते हैं जयमाल।।

चौपाई

सम्यक् चारित है शुभकारी, तीन लोक में मंगलकारी।
श्रावक का चारित्र बताया, बारह व्रत प्रतिमा युत गाया।।
मुनियों का चारित जो गाया, तेरह भेद युक्त बतलाया।
चारित जो भी प्राणी पावें, वे सब उत्तम सौख्य उपावें।।
चारित है शिव सुख का दाता, जीव मात्र का है जो त्राता।
चारित संयम भी कहलाए, सम्यक् दृष्टी प्राणी पाए।।
संयम जग में रक्षाकारी, संयम की महिमा है न्यारी।
सम्यक् चारित है मनहारी, जिसको पाते मुनि अनगारी।।
उत्तम संयम मुनिवर पावें, संयम पाके ध्यान लगावें।
संयम से ही संवर होवे, कर्म निर्जरा करके खोवें।।
संयम मूल धर्म का जानो, संयम शिव का मार्ग बखानो।
जन्मादि का रोग नशावें, उत्तम संयम जो नर पावें।।
मोह सुभट संयम से हारे, संयम सारे दोष निवारे।
जीते मन को संयम द्वारा, लक्ष्य बने प्रभु यही हमारा।।
संयम के दो भेद बताए, इन्द्रिय प्राणी संयम गाए।
देशव्रती अणुव्रत को धारें, मुनिवर संयम पूर्ण सम्हारें।।
संयम तीर्थंकर भी पावें, अनन्त चतुष्टय तब उपजावें।
संयम धर आतम को ध्यावें, संयम शिवपुर में पहुँचावे।।
संयम की जानो बलिहारी, सर्व सुखी हो जनता सारी।
हम भी उत्तम संयम पावें, कर्म नाश कर शिव पुर जावें।।
दोहा–**उत्तम चारित्र धर्म की, महिमा रही महान।**
चारित्र पाके भव्य जन, हो जाते भगवान।
ॐ ह्रीं सम्यक्चरित्राराधनाय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा–**चारित है उत्तम धरम, मोक्ष महल का द्वार**
हर भव में चारित 'विशद', पाएँ बारंबार।
(इत्याशीर्वाद पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

सम्यक् तप पूजा

(स्थापना)

अर्हन्त सिद्ध बने जो अब तक, सर्वकाल में महति महान्।
तप का आलम्बन लेकर ही, पाये शाश्वत पद निर्वाण॥
सम्यक् तप को पाकर अपना, आत्म बनाना है कुन्दन।
तपाराधना का करते हम, अतः हृदय में आह्वानन॥

दोहा–**कर्म निर्जरा शीघ्र हो, करते तप जो घोर।**
अतः सुतप आराधना, करते भाव विभोर॥

ॐ ह्रीं द्वादश विध तपाराधना! अत्र आगच्छ-आगच्छ संवौषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं द्वादश विध तपाराधना! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः-ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं द्वादश विध तपाराधना! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(प्राचीन छन्द)

प्रासुक नीर कलश में भरकर, जिन पद धार कराएँ जी।
जन्म जरादिक रोग अनादी अपने शीघ्र नशाएँ जी॥
सम्यक् तप को पाकर अपने, सारे कर्म नशाएँ जी।
शिव पथ के राही हे स्वामी, हम भी तो बन जाएँ जी॥1॥

ॐ ह्रीं सम्यक् तपाराधनाय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।

निज स्वभाव का शीतल चंदन, निज के हृदय सजाएँ जी।
आस्रव बन्ध रोकने जिन पद, चन्दन सरस चढ़ाए जी॥
सम्यक् तप को पाकर अपने, सारे कर्म नशाएँ जी।
शिव पथ के राही हे स्वामी, हम भी तो बन जाएँ जी॥2॥

ॐ ह्रीं सम्यक् तपाराधनाय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्व. स्वाहा।

पर परिणति को क्षय करने हम, अक्षत धवल धुवाएँ जी।
अक्षय पद हम पूजा करके जीवन में प्रगटाएँ जी॥
सम्यक् तप को पाकर अपने, सारे कर्म नशाएँ जी।
शिव पथ के राही हे स्वामी, हम भी तो बन जाएँ जी॥3॥

ॐ ह्रीं सम्यक् तपाराधनाय अक्षयपदप्राप्ताय अक्षतान् निर्व. स्वाहा।

रंग बिरंगे श्रेष्ठ सुगन्धित, सुरभित पुष्प मँगाएँ जी।
कामवाण का रोग अनादी, अपना हम विनशाएँ जी॥
सम्यक् तप को पाकर अपने, सारे कर्म नशाएँ जी।
शिव पथ के राही हे स्वामी, हम भी तो बन जाएँ जी॥4॥

ॐ ह्रीं सम्यक् तपाराधनाय कामबाणविधवंशनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

हम नैवेद्य सरस मनहारी, ताजे तुरत बनाएँ जी।
चरण कमल मे अर्पित करके, क्षुधा से मुक्ती पाएँ जी॥
सम्यक् तप को पाकर अपने, सारे कर्म नशाएँ जी।
शिव पथ के राही हे स्वामी, हम भी तो बन जाएँ जी॥5॥

ॐ ह्रीं सम्यक् तपाराधनाय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

भेद ज्ञान के दीपक उर में, अपने हम प्रजलाएँ जी।
मोह क्षोभ को शीघ्र नाशकर, केवल ज्ञान जगाएँ जी॥
सम्यक् तप को पाकर अपने, सारे कर्म नशाएँ जी।
शिव पथ के राही हे स्वामी, हम भी तो बन जाएँ जी॥6॥

ॐ ह्रीं सम्यक् तपाराधनाय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा।

दश प्रकार के सुरभित चंदन, की यह धूप जलाएँ जी।
काल अनादी शत्रु अपने, तव चरणों विनशाएँ जी॥
सम्यक् तप को पाकर अपने, सारे कर्म नशाएँ जी।
शिव पथ के राही हे स्वामी, हम भी तो बन जाएँ जी॥7॥

ॐ ह्रीं सम्यक् तपाराधनाय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्व. स्वाहा।

ताजे श्रेष्ठ सरस फल चरणों, हे प्रभु यहाँ चढ़ाएँ जी।
कभी प्राप्त ना किया मोक्षफल, तव चरणों में पाएँ जी॥
सम्यक् तप को पाकर अपने, सारे कर्म नशाएँ जी।
शिव पथ के राही हे स्वामी, हम भी तो बन जाएँ जी॥8॥

ॐ ह्रीं सम्यक् तपाराधनाय मोक्षफलप्राप्ताय फलं निर्व. स्वाहा।

जल चन्दन अक्षत पुष्पादिक, से हम अर्घ्य बनाएँ जी।
भव रोगों से मुक्ती पाकर, पद अनर्घ्य प्रगटाएँ जी॥
सम्यक् तप को पाकर अपने, सारे कर्म नशाएँ जी।
शिव पथ के राही हे स्वामी, हम भी तो बन जाएँ जी॥9॥

ॐ ह्रीं सम्यक् तपाराधनाय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा– शांतीधारा के लिए, भक्त खड़े कर जोर।
तप चर्या सद् साधना, होवे चारों ओर॥
शांतये शांतिधारा

पुष्पों से पुष्पाञ्जलि, करने आए आज।
सम्यकतय आराधना भाए सकल समाज॥
पुष्पांजलिं क्षिपेत्

चतुर्थ वलयः

दोहा–सम्यक् तप आराधना, है शिव का सोपान।
पुष्पांजलि करते यहाँ, पाने पद निर्वाण॥
(चतुर्थ वलयोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

(अर्घ्यावली) चौपाई

विषय कषाय तजें आहार, अनशन तप है मंगलकार।
उत्तम एक वर्ष का जान, भेद कई इसके पहिचान॥
है आराधना सुतप महान्, जिससे हो आतम का ध्यान।
सुतप धार लें हे भगवान!, हो जाए मेरा कल्याण॥1॥
ॐ ह्रीं अनशन तप गुण प्राप्त सर्व मुनीश्वरेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भोजन भूख से जो कम खाय, यह ऊनोदर तप कहलाय॥
तपकर कर्म निर्जरा पाय, अनुक्रम से नर शिवपुर जाय॥
है आराधना सुतप महान्, जिससे हो आतम का ध्यान।
सुतप धार लें हे भगवान!, हो जाए मेरा कल्याण॥2॥
ॐ ह्रीं ऊनोदर तप गुण प्राप्त सर्व मुनीश्वरेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मन में सोच विधि कर जाँय, मिले तभी वह भोजन पाँय।
तप यह जानो व्रत संख्यान, मुनिवर तप यह करें महान्॥
है आराधना सुतप महान्, जिससे हो आतम का ध्यान।
सुतप धार लें हे भगवान!, हो जाए मेरा कल्याण॥3॥
ॐ ह्रीं व्रत परिसंख्यान तप गुण प्राप्त सर्व मुनीश्वरेभ्योऽर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

विशद सम्यक् आराधना महामण्डल विधान

रस त्यागें शक्ती अनुसार, विषयों का करने परिहार।
तप कहलाये रस परित्याग, इसमें रखना तुम अनुराग॥
है आराधना सुतप महान्, जिससे हो आतम का ध्यान।
सुतप धार लें हे भगवान!, हो जाए मेरा कल्याण॥4॥
ॐ ह्रीं रस परित्याग तप गुण प्राप्त सर्व मुनीश्वरेभ्योऽर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

भूमी पाटा हो या घास, शांत रहें न होंय उदास।
प्रासुक शुभ शैय्या को पाय, विविक्त शैय्यासन तप कहलाय॥
है आराधना सुतप महान्, जिससे हो आतम का ध्यान।
सुतप धार लें हे भगवान!, हो जाए मेरा कल्याण॥5॥
ॐ ह्रीं विविक्त शैय्याशन तप गुण प्राप्त सर्व मुनीश्वरेभ्योऽर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

विषयों की तजकर के आस, सहें क्लेश देह से खास।
काय क्लेश यह तप कहलाय, कभी नहीं मन में घबड़ाय॥
है आराधना सुतप महान्, जिससे दो आतम का ध्यान।
सुतप धार लें हे भगवान!, हो जाए मेरा कल्याण॥6॥
ॐ ह्रीं कायोत्सर्ग तप गुण प्राप्त सर्व मुनीश्वरेभ्योऽर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जो प्रमाद से लागें दोष, दूषण से होवें निर्दोष।
करें प्रार्थना गुरु के पास, प्रायश्चित्त मैटे संताप॥
कर आराधना जीव महान, कर्मों की करते हैं हान।
करके अपने कर्म विनाश, जीव करें शिवपुर में वास॥7॥
ॐ ह्रीं प्रायश्चित् तप गुण प्राप्त सर्व मुनीश्वरेभ्योऽर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

देव शास्त्र गुरुवर के द्वार, अतिशय सिद्ध क्षेत्र उरधार।
इनकी विनय करें गुणवान, विनय सुतप हो उन्हे महान्॥
कर आराधना जीव महान, कर्मों की करते हैं हान।
करके अपने कर्म विनाश, जीव करें शिवपुर में वास॥8॥
ॐ ह्रीं विनय तप गुण प्राप्त सर्व मुनीश्वरेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मोदय से होवे रोग, खेद का हो जावे संयोग।
वह बाधा करने को दूर, वैय्यावृत्ती हो भरपूर॥

कर आराधना जीव महान, कर्मों की करते हैं हान।
करके अपने कर्म विनाश, जीव करें शिवपुर में वास॥9॥

ॐ ह्रीं वैय्यावृत्ति तप गुण प्राप्त सर्व मुनीश्वरेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवर की वाणी को पाय, हर्ष भाव से सुने सुनाय।
स्वाध्याय ये तप कहलाय, तपकर प्राणी कर्म नशाय॥
कर आराधना जीव महान, कर्मों की करते हैं हान।
करके अपने कर्म विनाश, जीव करें शिवपुर में वास॥10॥

ॐ ह्रीं स्वाध्याय तप गुण प्राप्त सर्व मुनीश्वरेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो ममत्व का करते त्याग, तन से न रखते हैं राग।
तप धारें प्राणी व्युत्सर्ग, कर्म नाश पावें अपवर्ग॥
कर आराधना जीव महान, कर्मों की करते हैं हान।
करके अपने कर्म विनाश, जीव करें शिवपुर में वास॥11॥

ॐ ह्रीं व्युत्सर्ग तप गुण प्राप्त सर्व मुनीश्वरेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो एकाग्र चित्त हो जाय, परमेष्ठी का ध्यान लगाय।
ध्यान सुतप पाके हर्षाय, कर्म निर्जरा कर शिव पाय॥
कर आराधना जीव महान, कर्मों की करते हैं हान।
करके अपने कर्म विनाश, जीव करें शिवपुर में वास॥12॥

ॐ ह्रीं ध्यान तप गुण प्राप्त सर्व मुनीश्वरेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कहे सुतप के बारह भेद, तपते ज्ञानी तज के खेद।
जिससे होवे आत्म विशुद्ध, होते प्राणी स्वयं प्रबुद्ध॥
कर आराधना जीव महान, कर्मों की करते हैं हान।
करके अपने कर्म विनाश, जीव करें शिवपुर में वास॥13॥

जयमाला

दोहा–**कर्मों का फैला कटे, तप से सारा जाल।**
तपाराधना की यहाँ, गाते हम जयमाल॥

(शम्भू छन्द)

इच्छाओं का रोध कहा तप, समीचीन हो भली प्रकार।
बाह्य सुतप के भेद कहे छह, श्री जिनवाणी के अनुसार॥
अनशन ऊनोदर तप जानो, और कहा व्रत परिसंख्यान।
रस परित्याग विविक्त शैय्यासन, काय क्लेश तप रहा महान॥
भेद कहे छह अभ्यन्तर के, प्रायश्चित्त अरु विनय विवेक।
व्युत्सर्ग वैय्यावृत्ती अरु, ध्यान सुतप है सबसे नेक॥
नर जीवन का सार सुतप है, जिसको धारें ज्ञानी जीव।
सम्यक् तप कर कर्म निर्जरा, क्षण में होती श्रेष्ठ अतीव॥
जो भी अब तक सिद्ध हुए हैं, सबने तप को पाया है।
उत्तम तप करके संतों ने, मुक्ती पथ अपनाया है॥
स्वजन और परिजन हैं तप ही, सुतप जीव का मित्र रहा।
सुतप धर्म कहलाए जग में, सुतप श्रेष्ठ चारित्र कहा॥
तप इस जग में सुखदायी है, तप है शिव नगरी का द्वार।
तप है पावन तीर्थ जगत में, तप जीवों का तारणहार॥
महापुरुष तप धारण करते, धार सकें न कायर लोग।
अविचल तप करने वालों को, मिलता मुक्ति वधु का योग॥
तप से आसन दृढ़ होता है, प्राणी सहते कायक्लेश।
ज्ञान ध्यान करते हैं प्राणी, सम्यक् तप से यहाँ विशेष॥
इन्द्रिय मन भी वश में होवे, भाते तपसी को न भोग।
बनते हैं शुभ भाव जीव के, तप से होता शुद्धोपयोग॥

(अडिल्ल छन्द)

सम्यक् तप ही नर जीवन का सार है,
सम्यक् तप बिन जीवन यह बेकार हैं।
आतम करता पावन परम पवित्र है,
तप ही सम्यक् दर्शन ज्ञान चरित्र है॥

ॐ ह्रीं सम्यक् तपाराधनाय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(अडिल्ल छन्द)

मन वच तन से सम्यक् तप को धारिए,
मानव जीवन का शुभ सार विचारिए।
शिवरमणी के बनते तप से कंत हैं,
उत्तम तपधारी होते जिन संत हैं।।

(इत्याशीर्वाद पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

जाप्य–**ॐ ह्रीं सम्यक् दर्शनज्ञानचारित तपेभ्यो नमः**

समुच्चय जयमाला

दोहा–**मोक्ष मार्ग में स्वयं को, ढाल सके तो ढाल।**
सम्यक् आराधना की यहाँ, गाते हम जयमाल।।

चौपाई

प्राणी जो मिथ्यात्व नशावें, वे सद्दृष्टी जीव कहावें।
शंकादिक दोषों के त्यागी, देव शास्त्र गुरु के अनुरागी।।
अष्ट मदों को भी जो त्यागें, ना अनायतन को अनुरागें।
रहे मूढ़ता के परिहारी, प्राणी सम्यक् श्रद्धाधारी।।
वस्तु जैसी वैसी जाने, अन्दर में वैसी श्रद्धाने।
शंसय विभ्रम मोह नशावें, स्व-पर का जो ज्ञान जगावें।।
मतिश्रुत अवधि ज्ञान बतलाए, मनः पर्यय केवल कहलाए।
अष्ट अंग युत ज्ञान कहाए, सम्यक् ज्ञानी प्राणी पाए।।
पंच पाप का जो परिहारी, होवे पंच महा व्रतधारी।
पंच समीतियाँ भी जो धारें, तीन गुप्तियाँ स्वयं सम्हारें।।
तेरह विधि चारित के धारी, साधू होते हैं अनगारी।
सम्यक् चारित जो भी पाये, मोक्ष मार्गपर कदम बढ़ाए।।
अनशनादि तप बाह्य कहाए, अभ्यन्तर तप छह कहलाए।
तप धारण करते अनगारी, कर्म निर्जरा करते भारी।।
सम्यक् तप जो साधू पाए, वे सब अर्हत पद प्रगटाए।

यही भावना रही हमारी, तप धारें होवे अनगारी।।
है आराधना जग कल्याणी, धारो सब हे जग के प्राणी।
जिसने यह साधन अपनाए, वह शिवपुर के राही गाये।।
यही भावना रही हमारी, दोषों के होके परिहारी।
'विशद' बनें आराधक भाई, पाएँ आराधना हम सुखदायी।।

दोहा–**दर्शन ज्ञानाचरण तप, पालें भली प्रकार।**
शिव पथ के राही बनें, करें आत्म उद्धार।।

ॐ ॐ ह्रीं सम्यक्दर्शन-ज्ञान-चारित-तपाराधनाय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा–**शुभाराधना में लगें, विशद हमारे भाव।**
सम्यक् चर्या का रहे, अन्तर मन में चाव।।

(इत्याशीर्वाद पुष्पाञ्जलि क्षिपेत्)

प्रशस्ति

ॐ नमः सिद्धेभ्यः श्री मूलसंघे कुन्दकुन्दाम्नाये बलात्कार गणे सेन गच्छे नन्दी संघस्य परम्परायां श्री आदि सागराचार्य जातास्तत् शिष्यः श्री महावीर कीर्ति आचार्य जातास्तत् शिष्याः श्री विमलसागराचार्या जातास्तत शिष्य श्री भरत सागराचार्य श्री विराग सागराचार्या जातास्तत् शिष्य आचार्य विशदसागराचार्य जम्बूद्वीपे भरत क्षेत्रे आर्य- खण्डे भारतदेशे दिल्ली प्रान्ते शकरपुर, लक्ष्मी नगर स्थित 1008 श्री आदिनाथ दि. जैन मंदिर मध्ये अद्य वीर निर्वाण सम्वत् 2539 वि.सं. 2070 सावन मासे कृष्णपक्षे दोज गुरुवासरे श्री सम्यक आराधना मण्डल विधान रचना समाप्ति इति शुभं भूयात्।

''सम्यक् आराधना की आरती''

जय जय जिनवर भक्त पुकारें, आरति मंगल गाएँ।
सम्यक् आराधना पाने हेतू, चरणों शीश झुकाएँ॥
जिनवर के चरणों में नमन्, प्रभुवर के चरणों में नमन॥टेक॥
मोक्ष महल की पहली सीढ़ी, सम्यक् दर्शन गाया।
अष्ट अंग पच्चिस दोषों से, विरहित जो बतलाया॥
उपशम क्षायिक और क्षयोपशम, भेद रूप कहलाए।
सम्यक आराधना पाने हेतू, चरणों शीश झुकाएँ॥1॥
जिनवर के चरणों में नमन्, प्रभुवर के चरणों में नमन॥
जीवाजीव का भेद बताने, वाला ज्ञान कहाए।
सम्यक् दर्शन पाने वाला, जीव ज्ञान यह पाए॥
मतिश्रुत अवधि मनः पर्यय अरु, केवल ज्ञान कहाए।
सम्यक् आराधना पाने हेतू, चरणों शीश झुकाएँ॥2॥
जिनवर के चरणों में नमन्, प्रभुवर के चरणों में नमन॥
बारह व्रत ग्यारह प्रतिमाएँ, आदि श्रावक का गाया।
तेरह भेद युक्त मुनियों का, चारित जिन बतलाया॥
सम्यक् चारित पाने वाले, मोक्ष मार्ग अपनाएँ।
सम्यक् आराधना पाने हेतू, चरणों शीश झुकाएँ॥3॥
जिनवर के चरणों में नमन्, प्रभुवर के चरणों में नमन॥
बाह्य सुतप के भेद बताए, अनशनादि छह भाई।
अभ्यन्तर तप छह होते हैं, शुभ मुक्ती पद दायी॥
सम्यक् तप कर कर्म निर्जरा, हे जिन! हम भी पाएँ।
सम्यक् आराधना पाने हेतू, चरणों शीश झुकाएँ॥4॥
जिनवर के चरणों में नमन्, प्रभुवर के चरणों में नमन॥
मोक्ष गये जो पूर्व काल में, सबने यह अपनाये।
हम भी यही भावना लेकर, द्वार प्रभू अब आये॥
'विशद' ज्ञान पाकर के हम भी, शिव नगरी को जाएँ।
सम्यक् आराधना पाने हेतू, चरणों शीश झुकाएँ॥5॥
जिनवर के चरणों में नमन्, प्रभुवर के चरणों में नमन॥

प. पू. १०८ आचार्य श्री विशदसागरजी महाराज की पूजन

पुण्य उदय से हे! गुरुवर, दर्शन तेरे मिल पाते हैं।
श्री गुरुवर के दर्शन करके, हृदय कमल खिल जाते हैं॥
गुरु आराध्य हम आराधक, करते उर से अभिवादन।
मम् हृदय कमल से आ तिष्ठो, गुरु करते हैं हम आह्वानन्॥

ॐ हूँ 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इति आह्वानन् अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

सांसारिक भोगों में फँसकर, ये जीवन वृथा गंवाया है।
रागद्वेष की वैतरणी से, अब तक पार न पाया है॥
विशद सिंधु के श्री चरणों में, निर्मल जल हम लाए हैं।
भव तापों का नाश करो, भव बंध काटने आये हैं॥

ॐ हूँ 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

क्रोध रूप अग्नि से अब तक, कष्ट बहुत ही पाये हैं।
कष्टों से छुटकारा पाने, गुरु चरणों में आये हैं॥
विशद सिंधु के श्री चरणों में, चंदन घिसकर लाये हैं।
संसार ताप का नाश करो, भव बंध नशाने आये हैं॥

ॐ हूँ 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय संसार ताप विध्वंशनाय चंदनं नि. स्वा.।

चारों गतियों में अनादि से, बार-बार भटकाये हैं।
अक्षय निधि को भूल रहे थे, उसको पाने आये हैं॥
विशद सिंधु के श्री चरणों में, अक्षय अक्षत लाये हैं।
अक्षय पद हो प्राप्त हमें, हम गुरु चरणों में आये हैं॥

ॐ हूँ 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् नि. स्वा.।

काम बाण की महावेदना, सबको बहुत सताती है।
तृष्णा जितनी शांत करें वह, उतनी बढ़ती जाती है॥

विशद सिंधु के श्री चरणों में, पुष्प सुगंधित लाये हैं।
काम बाण विध्वंश होय गुरु, पुष्प चढ़ाने आये हैं॥
ॐ ह्रूँ 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय कामबाण पुष्पं निर्व. स्वा.।

काल अनादि से हे गुरुवर! क्षुधा से बहुत सताये हैं।
खाये बहु मिष्ठान जरा भी, तृप्त नहीं हो पाये हैं॥
विशद सिंधु के श्री चरणों में, नैवेद्य सुसुन्दर लाये हैं।
क्षुधा शांत कर दो गुरु भव की! क्षुधा मेटने आये हैं॥
ॐ ह्रूँ 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं नि. स्वा.।

मोह तिमिर में फंसकर हमने, निज स्वरूप न पहिचाना।
विषय कषायों में रत रहकर, अंत रहा बस पछताना॥
विशद सिंधु के श्री चरणों में, दीप जलाकर लाये हैं।
मोह अंध का नाश करो, मम् दीप जलाने आये हैं॥
ॐ ह्रूँ 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय मोहान्धकार विध्वंशनाय दीपं नि. स्वा.।

अशुभ कर्म ने घेरा हमको, अब तक ऐसा माना था।
पाप कर्म तज पुण्य कर्म को, चाह रहा अपनाना था॥
विशद सिंधु के श्री चरणों में, धूप जलाने आये हैं।
आठों कर्म नशाने हेतू, गुरु चरणों में आये हैं॥
ॐ ह्रूँ 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं नि. स्वा.।

पिस्ता अरु बादाम सुपाड़ी, इत्यादि फल लाये हैं।
पूजन का फल प्राप्त हमें हो, तुमसा बनने आये हैं॥
विशद सिंधु के श्री चरणों में, भाँति-भाँति फल लाये हैं।
मुक्ति वधु की इच्छा करके, गुरु चरणों में आये हैं॥
ॐ ह्रूँ 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय मोक्ष फल प्राप्ताय फलं नि. स्वा.।

प्रासुक अष्ट द्रव्य हे गुरुवर! थाल सजाकर लाये हैं।
महाव्रतों को धारण कर लें, मन में भाव बनाये हैं॥
विशद सिंधु के श्री चरणों में, अर्घ समर्पित करते हैं।
पद अनर्घ हो प्राप्त हमें गुरु, चरणों में सिर धरते हैं॥
ॐ ह्रूँ 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्व. स्वा.।

जयमाला

दोहा– विशद सिंधु गुरुवर मेरे, वंदन करूँ त्रिकाल।
मन-वन-तन से गुरु की, करते हैं जयमाल॥

गुरुवर के गुण गाने को, अर्पित है जीवन के क्षण-क्षण।
श्रद्धा सुमन समर्पित हैं, हर्षायें धरती के कण-कण॥
छतरपुर के कुपी नगर में, गूँज उठी शहनाई थी।
श्री नाथूराम के घर में अनुपम, बजने लगी बधाई थी॥
बचपन में चंचल बालक के, शुभादर्श यूँ उमड़ पड़े।
ब्रह्मचर्य व्रत पाने हेतु, अपने घर से निकल पड़े॥
आठ फरवरी सन् छियानवे को, गुरुवर से संयम पाया।
मोक्ष ज्ञान अन्तर में जागा, मन मयूर अति हर्षाया॥
पद आचार्य प्रतिष्ठा का शुभ, दो हजार सन् पाँच रहा।
तेरह फरवरी बंसत पंचमी, बने गुरु आचार्य अहा॥
तुम हो कुंद-कुंद के कुन्दन, सारा जग कुन्दन करते।
निकल पड़े बस इसलिए, भवि जीवों की जड़ता हरते॥
मंद मधुर मुस्कान तुम्हारे, चेहरे पर बिखरी रहती।
तव वाणी अनुपम न्यारी है, करुणा की शुभ धारा बहती है॥
तुममें कोई मोहक मंत्र भरा, या कोई जादू टोना है।
है वेश दिगम्बर मनमोहक अरु, अतिशय रूप सलौना है॥
हैं शब्द नहीं गुण गाने को, गाना भी मेरा अन्जाना।
हम पूजन स्तुति क्या जाने, बस गुरु भक्ति में रम जाना॥
गुरु तुम्हें छोड़ न जाएँ कहीं, मन में ये फिर-फिरकर आता।
हम रहें चरण की शरण यहीं, मिल जाये इस जग की साता॥
सुख साता को पाकर समता से, सारी ममता का त्याग करें।
श्री देव-शास्त्र-गुरु के चरणों में, मन-वच-तन अनुराग करें॥
गुरु गुण गाएँ गुण को पाने, औ सर्वदोष का नाश करें।
हम विशद ज्ञान को प्राप्त करें, औ सिद्ध शिला पर वास करें॥
ॐ ह्रूँ 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वा.।

दोहा– गुरु की महिमा अगम है, कौन करे गुणगान।
मंद बुद्धि के बाल हम, कैसे करें बखान॥

(इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

प. पू. आचार्य गुरुवर श्री विशदसागरजी का चालीसा

दोहा– क्षमा हृदय है आपका, विशद सिन्धु महाराज।
दर्शन कर गुरुदेव के, बिगड़े बनते काज॥
चालीसा लिखते यहाँ, लेकर गुरु का नाम।
चरण कमल में आपके, बारम्बार प्रणाम॥

(चौपाई)

जय श्री 'विशद सिन्धु' गुणधारी, दीनदयाल बाल ब्रह्मचारी।
भेष दिगम्बर अनुपम धारे, जन-जन को तुम लगते प्यारे॥
नाथूराम के राजदुलारे, इंदर माँ की आँखों के तारे।
नगर कुपी में जन्म लिया है, पावन नाम रमेश दिया है॥
कितना सुन्दर रूप तुम्हारा, जिसने भी इक बार निहारा।
बरवश वह फिर से आता है, दर्शन करके सुख पाता है॥
मन्द मधुर मुस्कान तुम्हारी, हरे भक्त की पीड़ा सारी।
वाणी में है जादू इतना, अमृत में आनन्द न उतना॥
मर्म धर्म का तुमने पाया, पूर्व पुण्य का उदय ये आया।
निश्छल नेह भाव शुभ पाया, जन-जन को दे शीतल छाया॥
सत्य अहिंसादि व्रत पाले, सकल चराचर के रखवाले।
जिला छतरपुर शिक्षा पाई, घर-घर दीप जले सुखदाई॥
गिरि सम्मेदशिखर मनहारी, पार्श्वनाथजी अतिशयकारी।
गुरु विमलसागरजी द्वारा, देशव्रतों को तुमने धारा॥
गुरु विरागसागर को पाया, मोक्ष मार्ग पर कदम बढ़ाया।
है वात्सल्य के गुरु रत्नाकर, क्षमा आदि धर्मों के सागर॥
अन्तर में शुभ उठी तरंगे, सद् संयम की बढ़ी उमंगें।
सन् तिरान्वे श्रेयांसगिरि आये, दीक्षा के फिर भाव बनाए॥
दीक्षा का गुरु आग्रह कीन्हें, श्रीफल चरणों में रख दीन्हें।
अवसर श्रेयांसगिरि में आया, ऐलक का पद तुमने पाया॥
अगहन शुक्ल पञ्चमी जानो, पचास बीससौ सम्वत् मानो।

सन् उन्नीस सौ छियानवे जानो, आठ फरवरी को पहिचानो॥
विरागसागर गुरु अंतरज्ञानी, अन्तर्मन की इच्छा जानी।
दीक्षा देकर किया दिगम्बर, द्रोणगिरी का झूमा अम्बर॥
जयकारों से नगर गुँजाया, जब तुमने मुनि का पद पाया।
कीर्ति आपकी जग में भारी, जन-जन के तुम हो हितकारी॥
परपीड़ा को सह न पाते, जन-जन के गुरु कष्ट मिटाते।
बच्चे बूढ़े अरु नर-नारी, गुण गाती है दुनियाँ सारी॥
भक्त जनों को गले लगाते, हिल-मिलकर रहना सिखलाते।
कई विधान तुमने रच डाले, भक्तजनों के किए हवाले॥
मोक्ष मार्ग की राह दिखाते, पूजन भक्ति भी करवाते।
स्वयं सरस्वती हृदय विराजी, पाकर तुम जैसा वैरागी॥
जो भी पास आपके आता, गुरु भक्ति से वो भर जाता।
'भरत सागर' आशीष जो दीन्हें, पद आचार्य प्रतिष्ठा कीन्हें॥
तेरह फरवरी का दिन आया, बसंत पंचमी शुभ दिन पाया।
जहाँ-जहाँ गुरुवर जाते हैं, धरम के मेले लग जाते हैं॥
प्रवचन में झंकार तुम्हारी, वाणी में हुँकार तुम्हारी।
जैन-अजैन सभी आते हैं, सच्ची राहें पा जाते हैं॥
एक बार जो दर्शन करता, मन उसका फिर कभी न भरता।
दर्शन करके भाग्य बदलते, अंतरमन के मैल हैं धुलते॥
लेखन चिंतन की वो शैली, धो दे मन की चादर मैली।
सदा गूँजते जय-जयकारे, निर्बल के बस तुम्ही सहारे॥
भक्ति से हम शीश झुकाते, 'विशद गुरु' तुमरे गुण गाते।
चरणों की रज माथ लगावें, करें 'आरती' महिमा गावें॥

दोहा– 'विशद सिन्धु' आचार्य का, करें सदा हम ध्यान।
माया मोह विनाशकर, हरें पूर्ण अज्ञान॥
सूर्योदय में नित्य जो, पाठ करें चालीस।
सुख-शांति सौभाग्य का, पावे शुभ आशीष॥

– ब्र. आरती दीदी

आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज की आरती

(तर्जः–माई री माई मुंडरे पर तेरे बोल रहा कागा...)

जय-जय गुरुवर भक्त पुकारें, आरति मंगल गावें।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे॥
गुरुवर के चरणों में नमन्....4 मुनिवर के....

ग्राम कुपी में जन्म लिया है, धन्य है इन्दर माता।
नाथूराम जी पिता आपके, छोड़ा जग से नाता॥
सत्य अहिंसा महाव्रती की...2, महिमा कही न जाये।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे॥
गुरुवर के चरणों में नमन्....4 मुनिवर के....

सूरज सा है तेज आपका, नाम रमेश बताया।
बीता बचपन आयी जवानी, जग से मन अकुलाया॥
जग की माया को लखकर के....2, मन वैराग्य समावे।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे॥
गुरुवर के चरणों में नमन्...4 मुनिवर के....

जैन मुनि की दीक्षा लेकर, करते निज उद्धारा।
विशद सिंधु है नाम आपका, विशद मोक्ष का द्वारा॥
गुरु की भक्ति करने वाला...2, उभय लोक सुख पावे।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे॥
गुरुवर के चरणों में नमन्....4 मुनिवर के....

धन्य है जीवन, धन्य है तन-मन, गुरुवर यहाँ पधारे।
सगे स्वजन सब छोड़ दिये हैं, आतम रहे निहारे॥
आशीर्वाद हमें दो स्वामी....2, अनुगामी बन जायें।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे॥
गुरुवर के चरणों में नमन्...4 मुनिवर के...जय...जय॥

रचयिता : **श्रीमती इन्दुमती गुप्ता**, श्योपुर

आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज की आरती

(तर्जः–इह विधि मंगल आरती कीजे....)

बाजे छम-छम-छम छमा छम बाजे घूंघरू-2
हाथों में दीपक लेकर आरती करूँ-2॥ टेक॥

कुपी ग्राम में जन्म लिया हैं, इन्दर माँ को धन्य किया हैं
तो इसलिये, इसलिये गुरुवर तेरी आरती करूँ-2। हाथों में...
(1) बाजे छम-छम-छम...

गुरुवर आप है बालब्रह्मचारी, भरी जवानी में दीक्षाधारी
तो इसलिये, इसलिये गुरुवर तेरी आरती करूँ-2। हाथों में...
(2) बाजे छम-छम-छम...

विराग सागर जी से दीक्षा पाई, भरत सागर जी के तुम अनुयायीं
तो इसलिये, इसलिये गुरुवर तेरी आरती करूँ-2। हाथों में...
(3) बाजे छम-छम-छम...

विशद सागर जी गुरुवर हमारे, छत्तीस मूलगुणों को धारे
तो इसलिये, इसलिये गुरुवर तेरी आरती करूँ-2। हाथों में...
(4) बाजे छम-छम-छम...

संघ सहित गुरु आप पधारे, हम सबके यहाँ मन हर्षायें
तो इसलिये, इसलिये गुरुवर तेरी आरती करूँ-2। हाथों में...
(5) बाजे छम-छम-छम...

प.पू. साहित्य रत्नाकर आचार्य श्री 108 विशदसागर जी महाराज द्वारा रचित पूजन महामंडल विधान साहित्य सूची

1. श्री आदिनाथ महामण्डल विधान
2. श्री अजितनाथ महामण्डल विधान
3. श्री संभवनाथ महामण्डल विधान
4. श्री अभिनन्दननाथ महामण्डल विधान
5. श्री सुमतिनाथ महामण्डल विधान
6. श्री पद्मप्रभ महामण्डल विधान
7. श्री सुपार्श्वनाथ महामण्डल विधान
8. श्री चन्द्रप्रभु महामण्डल विधान
9. श्री पुष्पदंत महामण्डल विधान
10. श्री शीतलनाथ महामण्डल विधान
11. श्री श्रेयांसनाथ महामण्डल विधान
12. श्री वासुपूज्य महामण्डल विधान
13. श्री विमलनाथ महामण्डल विधान
14. श्री अनन्तनाथ महामण्डल विधान
15. श्री धर्मनाथ जी महामण्डल विधान
16. श्री शांतिनाथ महामण्डल विधान
17. श्री कुंथुनाथ महामण्डल विधान
18. श्री अरहनाथ महामण्डल विधान
19. श्री मल्लिनाथ महामण्डल विधान
20. श्री मुनिसुव्रतनाथ महामण्डल विधान
21. श्री नमिनाथ महामण्डल विधान
22. श्री नेमिनाथ महामण्डल विधान
23. श्री पार्श्वनाथ महामण्डल विधान
24. श्री महावीर महामण्डल विधान
25. श्री पंचपरमेष्ठी विधान
26. श्री णमोकार मंत्र महामण्डल विधान
27. श्री सर्वसिद्धीप्रदायक श्री भक्तामर महामण्डल विधान
28. श्री सम्मेद शिखर विधान
29. श्री श्रुत स्कंध विधान
30. श्री यागमण्डल विधान
31. श्री जिनबिम्ब पंचकल्याणक विधान
32. श्री त्रिकालवर्ती तीर्थंकर विधान
33. श्री कल्याणकारी कल्याण मंदिर विधान
34. लघु समवशरण विधान
35. सर्वदोष प्रायश्चित विधान
36. लघु पंचमेरू विधान
37. लघु नंदीश्वर महामण्डल विधान
38. श्री चंवलेश्वर पार्श्वनाथ विधान
39. श्री जिनगुण सम्पतिविधान
40. एकीभाव स्तोत्र विधान
41. श्री ऋषि मण्डल विधान
42. श्री विषापहार स्तोत्र महामण्डल विधान
43. श्री भक्तामर महामण्डल विधान
44. वास्तु महामण्डल विधान
45. लघु नवग्रह शांति महामण्डल विधान
46. सूर्य अरिष्टनिवारक श्री पद्मप्रभ विधान
47. श्री चौंसठ ऋद्धि महामण्डल विधान
48. श्री कर्मदहन महामण्डल विधान
49. श्री चौबीस तीर्थंकर महामण्डल विधान
50. श्री नवदेवता महामण्डल विधान
51. वृहद ऋषि महामण्डल विधान
52. श्री नवग्रह शांति महामण्डल विधान
53. कर्मजयी 1008 श्री पंच बालयति विधान
54. श्री तत्वार्थसूत्र महामण्डल विधान
55. श्री सहस्रनाम महामण्डल विधान
56. वृहद नंदीश्वर महामण्डल विधान
57. महामृत्युंजय महामण्डल विधान
59. श्री दशलक्षण धर्म विधान
60. श्री रत्नत्रय आराधना विधान
61. श्री सिद्धचक्र महामण्डल विधान
62. अभिनव वृहद कल्पतरू विधान
63. वृहद श्री समवशरण महामण्डल विधान
64. श्री चारित्र लब्धि महामण्डल विधान
65. श्री अनन्तव्रत महामण्डल विधान
66. कालसर्पयोग निवारक महामण्डल विधान
67. श्री आचार्य परमेष्ठी महामण्डल विधान
68. श्री सम्मेद शिखर कूटपूजन विधान
69. त्रिविधान संग्रह-1
70. त्रिविधान संग्रह-2
71. पंच विधान संग्रह
72. श्री इन्द्रध्वज महामण्डल विधान
73. लघु धर्म चक्र विधान
74. अर्हत महिमा विधान
75. सरस्वती विधान
76. विशद महाअर्चना विधान
77. विधान संग्रह (प्रथम)
78. विधान संग्रह (द्वितीय)
79. कल्याण मंदिर विधान (बड़ा गांव)
80. श्री अहिच्छत्र पार्श्वनाथ विधान
81. विदेह क्षेत्र महामण्डल विधान
82. अर्हत नाम विधान
83. सम्यक् अराधना विधान
84. श्री सिद्ध परमेष्ठी विधान
85. लघु नवदेवता विधान
86. विशद पञ्चागम संग्रह
87. जिन गुरु भक्ति संग्रह
88. धर्म की दस लहरें
89. स्तुति स्त्रोत संग्रह
90. विराग वंदन
91. बिन खिले मुरझा गए
92. जिंदगी क्या है
93. धर्म प्रवाह
94. भक्ति के फूल
95. विशद श्रमण चर्या
96. रत्नकरण्ड श्रावकाचार चौपाई
97. इष्टोपदेश चौपाई
98. द्रव्य संग्रह चौपाई
99. लघु द्रव्य संग्रह चौपाई
100. समाधितन्त्र चौपाई
101. शुभषितरत्नावली
102. संस्कार विज्ञान
103. बाल विज्ञान भाग-3
104. नैतिक शिक्षा भाग-1, 2, 3
105. विशद स्तोत्र संग्रह
106. भगवती आराधना
107. चिंतवन सरोवर भाग-1
108. चिंतवन सरोवर भाग-2
109. जीवन की मन:स्थितियाँ
110. आराध्य अर्चना
111. आराधना के सुमन
112. मूक उपदेश भाग-1
113. मूक उपदेश भाग-2
114. विशद प्रवचन पर्व
115. विशद ज्ञान ज्योति
116. जरा सोचो तो
117. विशद भक्ति पीयूष
118. विशद मुक्तावली
119. संगीत प्रसुन
120. आरती चालीसा संग्रह
121. भक्तामर भावना
122. बड़ा गाँव आरती चालीसा संग्रह
123. सहस्रकूट जिनार्चना संग्रह
124. विशद महाअर्चना संग्रह
125. विशद जिनवाणी संग्रह
126. विशद वीतरागी संत
127. काव्य पुञ्ज
128. पञ्च जाप्य
129. श्री चंवलेश्वर का इतिहास एवं पूजन चालीसा संग्रह
130. विजोलिया तीर्थपूजन आरती चालीसा संग्रह
131. विराटनगर तीर्थपूजन आरती चालीसा संग्रह